लिखने की शुरुआत — एक संवाद

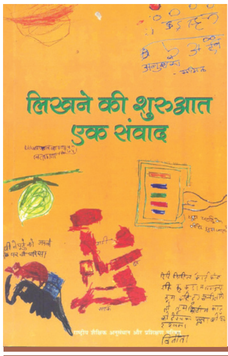

पुस्तक का नाम	*लिखने की शुरुआत – एक संवाद*
पृष्ठ संख्या	130
मूल्य	₹ 165
प्रकाशन	अक्तूबर 2013, प्रथम संस्करण
प्रकाशक	राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली

पढ़ने-लिखने की सार्थक शुरुआत स्कूली शिक्षा के आरंभिक दौर का एक अहम् हिस्सा है। सीखने-सिखाने के संदर्भ में शिक्षकों के साथ संवाद स्थापित करने की पहल एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा 2008 में की गई और पढ़ने की समझ शीर्षक से शिक्षक संदर्शिका प्रकाशित हुई। इस संदर्शिका में पढ़ने से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर चर्चा करने के साथ-साथ 'लिखित भाषा और कक्षा का स्वरूप' विषय पर भी विचार किया गया। विभिन्न शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में संदर्शिका के प्रयोग के दौरान यह महसूस किया गया कि लिखने की शुरुआत और लिखने के विभिन्न चरणों पर शिक्षकों से संवाद को और विस्तार देने की ज़रूरत है। इस ज़रूरत के आधार पर ही इस पुस्तक *लिखने की शुरुआत – एक संवाद* की परिकल्पना की गई। विविध अनुभवों से ज्ञात हुआ है कि लिखने को लेकर कक्षा एक और दो में जो वर्तमान परिदृश्य है उसमें बदलाव तथा शिक्षकों की समझ और रवैये पर विचार-विमर्श की ज़रूरत है। हमने पाया कि कक्षा में प्रिंट समृद्ध वातावरण की मौजूदगी से बच्चों में अपने आप पुस्तकें पढ़ने की ललक पैदा हुई है और साथ ही साथ पूरी पुस्तक पढ़ पाने का आनंद और विश्वास भी! पर विश्वास का अभाव लेखन के रूप में अपनी बात न कहने में अभी कायम है। अक्षर पहचान, अक्षरों की बनावट, सुलेख और सही वर्तनी पर ही पूरी ऊर्जा लगाकर बच्चे में लिख पाने का

आत्मविश्वास जगाना टेढ़ी खीर है। इस पुस्तक के अलग-अलग अध्यायों में दी गई अध्ययन-सामग्री द्वारा इस विमर्श तथा संभावित बदलाव के लिए बहुत सारी संभावनाएँ खोजी गई हैं। कक्षा एक में पहले दिन से ही लेखन की सार्थक शुरुआत कैसे हो? लिखने के विभिन्न चरण अपने आप में कितने महत्त्वपूर्ण हैं? ऐसे कई महत्त्वपूर्ण मुद्दों को इस पुस्तक में चर्चा का विषय बनाया गया है। यह पुस्तक पढ़ने की समझ के साथ लिखने की शुरुआत के संबंध में शिक्षकों के साथ संवाद बनाने का प्रयास है।

छोटे बच्चे बोलना जानते हैं और तमाम चीज़ों को लेकर उनकी एक समझ भी होती है। पेंसिल, चॉक आदि से वे कागज़, स्लेट एवं दीवारों पर आड़ी-तिरछी लकीरों में कुछ लिखते हैं और अपने मन के विचारों और कल्पनाओं को अपनी लिपि में आकार देते हैं। हममें से अधिकांश इसे निरर्थक मानते हैं पर ये छोटी, लंबी, गोल तिरछी लकीरें इनके मन की बातें हैं, जो लिखने की प्रक्रिया का एक बेहद अहम् हिस्सा हैं। ये लकीरें हमसे बहुत कुछ कहती हैं। हम बच्चों के मन की इन आवाज़ों को कैसे सुनें, समझें और महसूस करें इस बारे में संदर्शिका के प्रथम अध्याय 'शुरुआती लेखन' में चर्चा की गई है।

दूसरे अध्याय में 'बच्चों के चित्र-लेखन' की चर्चा की गई है। चित्र वह आइना है जिसमें बच्चों के मासूम मन की मासूम रंगतों और उकेरी गई लकीरों को गहराई से जाना-समझा जा सकता है। दरअसल चित्र भी एक प्रकार से मन की प्रभावी अभिव्यक्ति है। ज़रूरत है तो बस उन्हें समझने की। यह सही है कि बच्चे और हम सब चित्रों से अधिक जुड़ते हैं और अपनी बात कहने के लिए इनका सहारा लेते हैं। बच्चे अपनी समझ, भावनाओं और कल्पनाओं तथा अपने परिवेश और रोज़मर्रा की बातों को चित्रों के माध्यम से व्यक्त करते हैं। संभव है कि ये चित्र सही आकार, अनुपात और उचित रंग में न हों, परंतु ये आड़ी-तिरछी लकीरों और सामान्य लेखन के बीच सेतु का काम करते हैं। बच्चों के चित्रों पर बातचीत कर, उनमें आ रहे बदलावों और प्रिंट के साथ जुड़ाव को रेखांकित कर तथा जीवन के विविध अनुभवों से उसे जोड़कर शिक्षक बच्चों के लेखन और उनकी सृजनात्मकता को दिशा दे सकते हैं।

कक्षा एक और दो में लेखन की पारंपरिक प्रणाली में बच्चों की भाषा की जानकारी, उनके खेलगीत, उनकी सहज बातों की बजाय ज़्यादातर अक्षर लेखन और ऐसे लेखन पर बल दिया जाता है जिनका उनसे सीधा जुड़ाव नहीं होता। वे अपने आसपास के प्रिंट (रैपर, पोस्टर, टी.वी. कार्यक्रम आदि) जिनसे परिचित होते हैं उन्हें स्कूल में नहीं पाते। जब बच्चे को मन की बात लिखने का अवसर मिलता है तो घर और स्कूल की भाषा और विषयों का फ़र्क मिटता है।

अध्याय तीन 'कक्षा एक और दो में लेखन – एक दृष्टिकोण' में लिखना–पढ़ना और समझना इन तीनों को एक-दूसरे के पूरक के रूप में देखा गया है और उन अवसरों और संभावनाओं पर बात की गई है जिसमें बच्चे

गलत होने के भय से मुक्त होकर ज़्यादा से ज़्यादा अपनी भावनाओं को व्यक्त कर सकें।

किसी बच्चे की प्रगति में उसके कार्य पर बड़ों और साथियों की प्रतिक्रिया बहुत मायने रखती है और अकसर उसे सकारात्मक या नकारात्मक दिशा देती है। छोटी कक्षाओं में खास तौर से लेखन का आकलन करते समय अकसर बच्चों की समझ और मौलिकता की बजाय वर्तनी, लिखावट और व्याकरण आदि पर बल दिया जाता है और इसकी त्रुटियों को बच्चों की समझ की कमी से जोड़ा जाता है। संदर्शिका के चौथे अध्याय 'लेखन का आकलन' में भाषा के यांत्रिक (वर्तनी आदि) पक्ष की बजाय इस बात पर बल दिया गया है कि बच्चे खुलकर अपने मन की बात कह पाएँ, उनके लेखन का उद्देश्य हो तथा लेखन में हर बच्चे की अपनी खास विशेषताएँ उभरकर सामने आएँ। कुछ भी पढ़ने और जैसी मर्ज़ी वैसे खेल खेलने की तरह लेखन या चित्र बनाना भी हर तरह के बंधन से मुक्त हो। बच्चे ऐसा कर पाएँ इसके लिए आकलन की रूपात्मक पद्धति (जिसमें बच्चों की प्रतिदिन की गतिविधि का आकलन होता है) पर बल दिया गया है। बच्चों का आकलन इस तरह का हो जो उन्हें बोझ न लगे और वे उसे अपने मन की बात व्यक्त करने और मज़ेदार कार्य करने के रूप में देखें।

पाँचवाँ अध्याय 'कार्य-योजना' का है। इसे विसंगति ही कहा जाएगा कि छोटे-से-छोटे काम को करने से पहले हम उसकी तैयारी करते हैं और प्रत्येक चरण की एक योजना बनाते हैं परंतु शिक्षण के बारे में हम यह मानकर चलते हैं कि यह तो यूँ ही हो जाएगा। इस अध्याय में शिक्षक की प्रत्येक योजना के प्रभाव और लेखन-पठन की प्रक्रिया को सार्थक एवं रुचिकर बनाने में एक सुगठित तथा व्यवस्थित दैनिक कार्य-योजना की भूमिका पर विचार किया गया है। योजना के माध्यम से कक्षा एक और दो के कार्यों को ज़्यादा से ज़्यादा संतुलित बनाने, विभिन्न कार्यों को सही समय पर उचित ढंग से पूरा कर पाने और सभी बच्चों का समुचित विकास करने में मदद मिलती है।

पुस्तक से कुछ अंश यहाँ दिए जा रहे हैं–

कक्षा को लिखत/प्रिंट समृद्ध बनाने के लिए कुछ गतिविधियाँ

बच्चों की स्कूल की दिनचर्या को पढ़ने-लिखने की गतिविधियों से जोड़ते रहना चाहिए। निम्नलिखित गतिविधियों को आधार बनाकर कक्षा के लिए लिखत/प्रिंट तैयार किया जा सकता है। यह लिखत/प्रिंट बच्चों को पढ़ने-लिखने के सार्थक अवसर भी प्रदान करेगा।

- सप्ताह में एक बार योजनाबद्ध तरीके से खेल का आयोजन करवाएँ।

इसके लिए सबसे पहले बच्चों के साथ मिलकर खेल का चुनाव करें। कुछ इस तरह का चार्ट खेल से 3-4 दिन पहले बनाएँ–

खेल का नाम	*दिन*	*टीम क या 1*	*टीम ख या 2*

पूरे कॉलम भरने पर चार्ट को कक्षा में ऐसी जगह लगाएँ, जिसे बच्चे आसानी से पढ़ सकें।

बच्चों को प्रिंट से रू-ब-रू कराने के लिए आप बच्चों से अपना और अपने साथियों का नाम चार्ट में खोजने के लिए कह सकते हैं।

खेल के आयोजन की समाप्ति पर 'परिणाम' (रिज़ल्ट) का भी चार्ट कक्षा को लिखत/प्रिंट समृद्ध बनाने के लिए लगाया जा सकता है। गतिविधि के रूप में चार्ट में जीतने वाली टीम के बच्चों के नाम और खेलों का नाम, दिन का नाम इत्यादि तालिका में बच्चों के पढ़ने के लिए लिख दें।

- इसी तरह आप बच्चों के साथ मिलकर कहानी पढ़ने का दिन निश्चित करें। फिर इस तरह चार्ट बनाएँ–

कहानी का नाम	*लेखक का नाम*	*कहानी पढ़ने का दिन*	*समय*

सारे कॉलम भर लीजिए। समय के कॉलम में आप लिख सकते हैं खाना खाने से पहले/खाना खाने के बाद।

चार्ट को कक्षा में लगाएँ और बनाई गई योजना के अनुसार कहानी पर आधारित गतिविधियाँ कराएँ। एक दूसरी गतिविधि के रूप में बच्चों के साथ मिलकर कहानी बनाएँ और उसे दर्शाएँ। बच्चों को नई बनाई कहानी पढ़ने का समय और अवसर दें। बच्चों द्वारा कहानी के पात्रों को आधार मानकर अभिनय करवाएँ।

- बच्चों द्वारा एकत्रित जानकारियों, खबरों इत्यादि को लिखकर कक्षा में लगाएँ और समयानुसार इन पर बातचीत करें।
- स्कूल संबंधी जानकारियों को भी कक्षा में लिखित रूप से लगवाएँ। इन जानकारियों पर आप बच्चों से बातचीत करें।
- आप उपस्थिति चार्ट और मिड-डे-मील के बारे में बच्चों की जानकारी को भी दीवार पर प्रदर्शित कर सकते हैं। बच्चों के मनपसंद खान-पान की जानकारी को भी लिखत/प्रिंट के रूप में इस्तेमाल कर पढ़ने-लिखने की गतिविधियाँ तैयार की जा सकती हैं।
- स्कूल की प्रातःकालीन सभा में भी आप बच्चों को कविताएँ, लोकगीत, कहानियाँ सुनाने का मौका दे सकते हैं। कक्षा 1 और 2 में ऐसी गतिविधियाँ समूह में करवाएँ जिनसे बच्चों का आत्मविश्वास बढ़ेगा। बच्चों की तैयारी के साथ योजना का एक चार्ट बनाएँ, जैसे–

कविता/कहानी/लोकगीत का नाम	**बच्चों के नाम**	**दिन**	**तारीख**

कक्षा का अर्थपूर्ण लिखत/प्रिंट से समृद्ध वातावरण बच्चों को पढ़ने-लिखने की गतिविधियाँ करने में सहायक होता है। बच्चों को अलग-अलग स्थितियों में पढ़ने से योजना बनाकर काम करने की आदत भी बनने लगती है। इस तरह की गतिविधियों को करने से बच्चे स्कूल से जुड़ाव महसूस करेंगे और स्कूल में आने के अपने उद्देश्य स्वयं निश्चित करेंगे। प्रस्तावित कुछ गतिविधियों से कक्षा संचालन में बच्चों और शिक्षकों की भागीदारी सुनिश्चित होने लगेगी जो कि अपने आप में एक उपलब्धि होगी।

कक्षा एक और दो में लेखन एक दृष्टिकोण

अपने आसपास कक्षा 1 और 2 के बच्चों को पढ़ना-लिखना सीखने के नाम पर अक्षर, उनकी ध्वनि, बनावट और उनसे शुरू होने वाले एक-एक शब्द को अच्छी तरह से रटते देखने का अनुभव शायद किसी भी पाठक के लिए नया नहीं होगा। दूसरी तरफ़ इन्हीं बच्चों का अपने खेलों में अलग-अलग खेलगीतों का इस्तेमाल करना, शब्दों के साथ खेलना, तुकबंदी करना, खेल-खेल में किसी का अभिनय करते हुए उस व्यक्ति जैसी बातचीत करना, और तो और अकेले खेलते समय अपनी क्रियाओं के बारे में सोचते हुए साथ-साथ बोलना आदि भी कुछ ऐसे अनुभव हैं जो अपने आप में काफ़ी मायने रखते हैं। हम जानते हैं और मानते भी हैं कि बच्चे सही और प्रभावी रूप से बात करने, सोचने, खेलने के लिए भाषा का इस्तेमाल करते हैं। लेकिन ऐसा क्यों होता है कि बच्चों के ये व्यवहार, जो भाषा पर उनकी पकड़ के साथ-साथ भाषा के बारे में उनकी जानकारी और समझ को दर्शाते हैं-कक्षा की दहलीज़ के बाहर रह जाते हैं, क्यों बच्चों की भाषा संबंधी ये उपलब्धियाँ शुरुआत में बताए गए अक्षर सीखने के शोर में कहीं खो जाती हैं? क्या पढ़ना-लिखना सीखने का आरंभ स्कूल में अक्षर सीखने से ही शुरू होता है? इन सवालों के जवाब के लिए हमें सबसे पहले यह समझने की ज़रूरत है कि बच्चे भाषा-प्रयोग की जिस समझ के साथ स्कूल में आते हैं, उसका पढ़ने-लिखने के साथ गहरा संबंध है।

क्या है पढ़ना और लिखना?

अक्षर और उसकी ध्वनि का आपसी संबंध सीखना ही आम तौर पर पढ़ना-लिखना सीखने की शुरुआत समझा जाता है। यह समझ कक्षा में अक्षर, शब्द, वाक्य और फिर शायद कहानी या कविता पढ़-लिख पाने के क्रम में नज़र आती है। अब ज़रा गौर करते हैं कि बात करना सीखना या बच्चों द्वारा मौखिक भाषा का उपयोग करना भी क्या ऐसी क्रमबद्ध और औपचारिक शिक्षा के मोहताज हैं? बच्चे रोज़मर्रा की विभिन्न स्थितियों में बड़ों को एक-दूसरे से बात करते हुए सुनते हैं। धीरे-धीरे बच्चे खुद अपने विचार दूसरों तक पहुँचाने के लिए मिलती-जुलती संरचनाओं का इस्तेमाल करने लगते हैं और बड़ों की प्रतिक्रिया के अनुसार उन्हें बदलते चलते हैं। यह कौशल बातचीत के स्वाभाविक और अर्थपूर्ण संदर्भ में विकसित होता है।

इसी उम्र में बच्चे अपने आसपास की लिखित सामग्री, जैसे कि बिस्कुट और टॉफ़ी की पन्नी, सड़क पर लगे निर्देश बोर्ड और पोस्टरों आदि को पढ़ने की कोशिश करते हैं। हाथ में कलम, पेंसिल या स्लेटी आते ही आड़ी-तिरछी लकीरें खींचकर उनके साथ कोई अर्थ या संदेश जोड़ने की कोशिश करते हैं- यह भी लिखने की शुरुआत का हिस्सा है। ये उनकी प्रारंभिक साक्षरता के संकेतक हैं, अर्थ गढ़ने के सहज प्रयास के ही रूप हैं- किसी औपचारिक शिक्षा

का परिणाम नहीं। असल में रोज़मर्रा के अर्थपूर्ण और कार्यात्मक संदर्भों में मौखिक भाषा के विकास की ही तरह पढ़ने-लिखने की समझ भी विकसित होती है।

कक्षा में लेखन का स्वरूप

अब विचारणीय यह है कि आरंभिक साक्षरता की इस अवधारणा को और अधिक विस्तार एवं गहनता से समझना और कक्षा में स्थान देना क्यों आवश्यक है और बच्चों का सीखना एक सार्थक कार्य कैसे बने? स्कूल में आए बच्चे पहले से ही बोलचाल की भाषा के ज्ञान और पढ़ने-लिखने की कुछ महत्वपूर्ण अवधारणाओं से लैस होते हैं। यदि सिखाने की प्रक्रिया बच्चों की इस क्षमता को ज़रूरी आधार मानकर स्वाभाविक तरीके से आगे बढ़ाई जाएगी तो पढ़ना-लिखना सीखना एक रुचिकर और अर्थपूर्ण अनुभव हो जाएगा।

बच्चों के चित्रों की टेढ़ी-मेढ़ी लकीरें भी बहुत कुछ कहती हैं। चित्र बनाने का अवसर उन्हें अपने अनुभव तथा अपने विचार प्रस्तुत करने के लिए प्रोत्साहित करता है। लिखने के इस चरण में ऐसे निजी अर्थ को सर्वमान्य या साँझे रूप से समझने के लिए यदि शिक्षक बच्चे के द्वारा उसके चित्र के बारे में बताए गए नाम या संदेश को ज्यों का त्यों लिख दें तो लिखने के कार्यात्मक प्रयोग से बच्चा उसी पल अवगत होने लगता है। लिखत/प्रिंट का प्रयोग कुछ अर्थपूर्ण कहने के लिए हुआ है, ऐसे ही कार्यों से साक्षरता की अवधारणा स्पष्ट होती जाती है। पढ़ने-लिखने के बढ़ते अवसरों के साथ यह समझ और भी गहरी होती जाती है। साथ-ही-साथ लिखने के तकनीकी पहलू सामने आने लगते हैं, जैसे – लिखने की दिशा बाएँ से दाएँ (हिंदी में) या दाएँ से बाएँ, (उर्दू में), संकेतों की आकृति, दो शब्दों के बीच की खाली जगह, देवनागरी लिपि में शब्द के ऊपर लकीर खींचना आदि।

इन अवधारणाओं की समझ बच्चों के स्वयं 'लिखने' के प्रयास में धीरे-धीरे नज़र आने लगती है, ज़रूरत है तो सिर्फ़ सही अवलोकन की।

लेखन के इसी परिप्रेक्ष्य में पठन-लेखन के गहरे संबंध को समझना होगा। दरअसल, अर्थपूर्ण गतिविधियों के माध्यम से पढ़ते समय समझने और सोचने के लिए बच्चों को प्रोत्साहित करना ज़रूरी है अन्यथा अक्षरों की आवाज़ को मिलाकर बोल पाना ही 'पढ़ना' मान लिया जाएगा। लिखने की तरह पढ़ने की प्रक्रिया में भी अर्थ समझने की प्राथमिकता को स्वीकार करते हुए बच्चे धीरे-धीरे पढ़ पाने के कौशल की बारीकियों को समझने लगते हैं, जैसे-पढ़ने की दिशा, संदर्भ से पठन सामग्री का अनुमान लगाना आदि। इस संदर्भ में ध्वनि-अक्षर के संबंधों की समझ भी बनने लगती है।

अक्षर-ध्वनि संबंध

दो शिक्षकों के बीच जिस मुद्दे पर संवाद हो रहा है यह वास्तव में कई शिक्षकों के मन में आता है। परंतु गौरतलब बात यह है कि लिखत (प्रिंट) के साथ जुड़ने के लगातार मौकों से बच्चों में लिखत की अवधारणा के साथ अक्षर-ध्वनि

संबंधों की समझ भी बनती चली जाती है। हाँ, यह संभव है कि कुछ अक्षरों की ध्वनियों की पहचान बच्चों को कभी-कभी किसी दूसरे द्वारा ध्यान दिलाने से ही स्पष्ट होती है। बार-बार प्रयोग में आने वाले अक्षरों के ध्वनि-संकेतों की पहचान बच्चों को स्वत: ही हो जाती है। जैसा कि चित्र में भी आप देख सकते हैं कि बच्चे को 'ू' और 'ो' के ध्वनि-संकेतों में उलझन है। पर साथ ही उसे यह ज्ञान भी है कि 'ू' और 'ो' मिलती-जुलती आवाज़ों के चित्र हैं। इसलिए आवश्यकता के अनुसार शिक्षक अक्षर-ध्वनि संकेत पर भी ध्यान आकर्षित कर सकते हैं। यह बिलकुल ज़रूरी नहीं कि उन्हें ऐसा दोहराव हमेशा करना पड़े। किसी कहानी या संदर्भ में यदि किसी खास अक्षर/वर्ण की पुनरावृत्ति हो रही है तो कक्षा में सभी बच्चों के साथ इस संभावना पर भी ध्यान दिया जा सकता है। उदाहरण के लिए 'हाथी की हिचकी' कहानी में 'ह' की पुनरावृत्ति इसके लिए उपयुक्त हो सकती है। पर शुरुआती स्तर पर मात्राओं पर अलग से बल देने की ज़रूरत नहीं है। किसी खास वर्ण की तुलना में मात्राओं का

इस्तेमाल बच्चे हर शब्द में देख सकते हैं। इस तरह खुद ही उनकी मात्राओं के इस्तेमाल की कुछ समझ बन जाती है। कक्षा एक और दो में हमारा ध्यान बच्चों को शुद्ध वर्तनी सिखाने पर नहीं बल्कि इस बात पर होना चाहिए कि बच्चे अपने मन की बात स्ववर्तनी में भी बेझिझक व्यक्त करते हैं। नीचे दिए गए उदाहरण से हमें यह पता लगेगा कि बच्चों में अक्षर ध्वनि संबंध बनाने में शिक्षक और लिखत/प्रिंट समृद्ध वातावरण की क्या भूमिका होती है।

आज की कार्य-योजना के तहत मैंने सोचा कि आज रीना पर खास ध्यान दूँगी। जब सभी बच्चे रीडिंग कॉर्नर से किताबें पढ़ रहे थे, मैंने रीना से कहा कि अपनी पसंद की कहानी की किताब लाए। वह लालू और पीलू की किताब लाई। हम दोनों ने मिलकर चित्रों की मदद से कहानी पढ़नी शुरू की। रीना ने चित्रों में दिख रहे पात्रों को नाम देना शुरू किया और मैं चित्रों में हो रही घटनाओं का विवरण दे रही थी। उसके विवरण देने के बाद मैं पृष्ठ पर लिखी लाइन को अँगुली रखकर उसके लिए पढ़ देती। इस तरह हमने पूरी किताब पढ़ ली। फिर मैंने रीना से कहा कि अब वह स्वयं उस कहानी को पढ़े। वह किताब लेकर अपनी जगह पर बैठ गई और अपनी सहेली के साथ किताब पढ़नी शुरू कर दी। थोड़ी ही देर में वह किताब लेकर मेरे पास आई और कहा 'अब मैं पढ़ सकती हूँ।' मुझे उसका आत्मविश्वास देखकर खुशी हुई। मैंने कहा, चलो पढ़ते हैं।" उसने पहले पृष्ठ पर चित्रों से ही कहानी पढ़ी। फिर वह नीचे लिखे वाक्यों को पढ़ने की कोशिश करने लगी। उसने लिखत से लालू और मुर्गी को पहचान लिया। दूसरे पृष्ठ पर मैंने उसका ध्यान पीलू की ओर दिलाया फिर यह तीन शब्द वह हर पृष्ठ पर पहचानती गई। (शिक्षक की अनुभव डायरी पर आधारित एक घटना)

अक्षर-ध्वनि संबंध की समझ बच्चों के लेखन में लगातार झलकती है। शिक्षक अब एक और महत्वपूर्ण अवधारणा बच्चे के लेखन में देख सकते हैं और लिखने की प्रक्रिया ऐसे सार्थक अवसरों में परिपक्व होती हुई धीरे-धीरे पारंपरिक लेखन की ओर बढ़ती जाती है। बच्चे अपनी बात लिखने के प्रयास में अक्षर-ध्वनि संबंधों की समझ का इस्तेमाल करते हुए वर्तनी की खोज भी करने लगते हैं।

स्ववर्तनी लेखन के कुछ नमूनों में प्रयास प्रोत्साहन योग्य हैं; बच्चों की अपनी दिली-बात लिखकर बताने की ललक इनमें साफ़ झलकती है। परंतु अकसर शिक्षकों को वर्तनी की ये 'त्रुटियाँ' स्थायी लगती हैं और इस कारण इन्हें अन्य 'त्रुटियों' की तरह डाँट-डपटकर सुधारने की कोशिश की जाती है।

बोलना सीखने की प्रक्रिया में भी बच्चों की जुबान जब जाने-माने शब्दों से मिलते-जुलते शब्द बनाती है तो क्या हम उसे प्रोत्साहित नहीं करते? तो फिर लिखना सीखने की स्वाभाविक प्रक्रिया में स्ववर्तनी की खोज के ये उदाहरण चिंताजनक क्यों? **अर्थपूर्ण संदर्भ में लिखित सामग्री से बढ़ते संपर्क स्ववर्तनी को भी पारंपरिक लेखन की ओर ले जाते**

हैं इसलिए लिखने के साथ-साथ पढ़ने के अवसर बनाए रखना भी अत्यंत आवश्यक है साथ ही पढ़ने-लिखने की समझ को एक स्वाभाविक, विकासात्मक नज़रिए से बढ़ावा देना ज़रूरी है।

पढ़ने-लिखने का संबंध

कक्षा में लेखन के परिप्रेक्ष्य में एक बार फिर पढ़ने-लिखने का संबंध समझना अनिवार्य है। जैसे कि पहले बात की गई है, ये दोनों प्रक्रियाएँ एक-दूसरे की पूरक हैं। पठन में सीखी गई अवधारणाएँ और कौशल लेखन में काम आते हैं और लेखन की पठन में। अत: बच्चों के लिखित संदेशों को उन्हीं के द्वारा ज़रूर पढ़ाया जाना चाहिए तथा पढ़ी हुई सामग्री से संबंधित

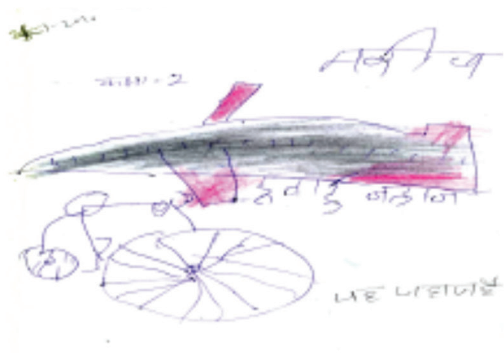

लेखन का कार्य देना चाहिए। इससे पढ़ी हुई सामग्री की समझ बच्चों को अपने निजी अनुभवों की अभिव्यक्ति में सहायता करेगी। यह प्रक्रिया लेखन को अर्थपूर्ण संदर्भों में प्रयोग करने के लिए प्रेरित करेगी। कुछ लेखकों का यह भी मानना है कि पढ़ने से उनके निजी अनुभवों का विस्तार होता है और नये अनुभव, अनुभव कोष में जुड़ जाते हैं जिसकी झलक लेखन में देखी जा सकती है। लेखन के दौरान एक लेखक अपने विचारों के साथ जूझते हुए उन्हें कागज़ पर उतारने की कोशिश करता है। यह प्रक्रिया पढ़ने-लिखने के बीच घनिष्ठ संबंध बनाने में और इन्हें गहराई से समझने में सहायक होती है। एक स्थायी पाठक और अच्छा लेखक बनाने में यही कौशल महत्वपूर्ण है।

कक्षा में लेखन के मौके

प्राय: कक्षाओं में लेखन की समझ पठन की तरह ही वर्णमाला की शुरुआत पर निर्भर मानी जाती है। इसके पीछे धारणा यह है कि लिखित कार्य तो वर्णमाला सीख लेने पर ही संभव है। वर्णमाला के ज्ञान के बाद भी बच्चे अपने

विचारों, अपने अनुभवों को अभिव्यक्त नहीं कर पाते। आमतौर पर कक्षा में बच्चों के विचारों और विषयवस्तु से अधिक तकनीकी पहलू, जैसे-वर्तनी, लिखावट आदि पर ध्यान दिया जाता है। इसके परिणामस्वरूप कक्षा में लेखन कार्य वर्णमाला की सुंदर लिखावट, सुलेख,

प्रश्न–उत्तरों को देखकर लिखना, श्रुतलेख आदि तक ही सीमित होता है। ऐसे अभ्यास बच्चों की लिखने की स्वाभाविक इच्छा पर रोक लगा देते हैं और अपनी बातें लिखने की उत्सुकता कहीं खो जाती है। लिखना सीखने–सिखाने का यह तरीका बच्चों की सक्रिय खोज और लेखन के उद्देश्य, 'अभिव्यक्ति' के विरुद्ध जाता है। कक्षा में लेखन कार्य इस प्रकार का हो जो स्वाभाविक और विकासात्मक दृष्टि से बच्चे को एक सक्रिय लेखक बनने के अवसर देता हो। लेखन को संप्रेषण का, अपनी बात कहने, कल्पना करने, जानकारी देने, सूचित करने, पता लगाने, खोज करने, भावों को व्यक्त करने का सशक्त माध्यम समझना चाहिए। किसी भी आयु या स्तर पर लेखन–कार्य ऐसा हो जो बच्चों को लेखन के इस कार्यात्मक प्रयोग से संबंध बनाने का अवसर दे। नीचे दिए कुछ बिंदु ऐसी गतिविधियों का निर्माण करने में सहायक हैं –

1. **बाल–साहित्य और लेखन** – लिखने के विषय और लिखकर कुछ कहने के अवसर प्रायः शिक्षक द्वारा सुनाई गई कहानी से जुड़े होने चाहिए। बच्चों की लिखने की समझ और कौशल के अनुसार शिक्षक कहानी के किसी अंश से मिलता–जुलता अनुभव बच्चों को चित्र द्वारा अभिव्यक्त करने के लिए कह सकते हैं। इस चित्र पर शिक्षक बच्चे के अनुभव को उसी के शब्दों में लिख सकते हैं अथवा थोड़े बड़े बच्चे वह बात खुद लिखने का प्रयास कर सकते हैं। इस प्रयास में भी शायद कोई बच्चा केवल कुछ वस्तुओं और व्यक्तियों के नाम लिखे या स्ववर्तनी में पूरा वाक्य। शिक्षक के लिए यह आवश्यक है कि वह इन साक्ष्यों को रिकॉर्ड कर उनका आकलन करे और प्रत्येक बच्चे के मौजूदा कौशल को समझकर उसे आगे लेकर जाने के उचित अवसर प्रदान करे।

   कहानी के पात्रों को नाम देना, कहानी का नया शीर्षक लिखना और कहानी को आगे बढ़ाना आदि लेखन के अन्य अवसर हैं। कविताओं में तुकबंदी वाले शब्द बच्चों का ध्यान आकर्षित करते हैं तथा इसी रुचि को महत्त्व देते हुए बच्चे आगे बढ़ाई गई कविता की पंक्तियों में ऐसे शब्द खुद लिख सकते हैं अथवा कविता की समझ के आधार पर स्वयं पंक्तियाँ जोड़ सकते हैं।
2. **अनुभव–आधारित लेखन** – बच्चों के रोज़मर्रा की कक्षा और कक्षा के बाहर के अनुभव भी लिखने के महत्वपूर्ण अवसर हैं। रोज़ाना कक्षा का कुछ निर्धारित समय पिछले दिन का अनुभव बाँटने और उन अनुभवों को लिखने के लिए दिया जा सकता है।
3. **पाठ्यपुस्तक का प्रयोग** – शिक्षक लेखन के अवसरों के लिए पाठ्यपुस्तक में दी गई कहानियाँ और कविताएँ भी उपयोग में ला सकते हैं। ध्यानपूर्वक बनाई गई योजना कक्षा में मौजूद अन्य बाल साहित्य से इन पाठों का संबंध बना सकती है और बच्चे अब एक ही विषय से संबंधित सामग्री का आनंद ले सकते हैं। पाठ्यपुस्तक संबंधित लिखने की गतिविधियाँ भी पारंपरिक प्रश्नोत्तर,

रिक्त स्थान भरो आदि के बजाय रुचिकर और अर्थपूर्ण बनाई जाएँ तो लेखन जल्दी ही अभिव्यक्ति का एक मज़ेदार माध्यम बन जाएगा।

4. **लिखत/प्रिंट समृद्ध कक्षा का लेखन में सहयोग** – बच्चों द्वारा लिखे गए नाम, शीर्षक, अनुभव, कहानियाँ आदि कक्षा में प्रदर्शित करने से भी लेखन को प्रोत्साहन मिलता है। कक्षा में स्थान प्राप्त करने से ज़्यादा अपने लेखन के लिए एक प्रामाणिक पाठक और कारण का होना लेखन कार्य को और सार्थक बनाता है। शिक्षक द्वारा लिखी गई 'आज की बात' (मॉर्निंग मैसेज) धीरे-धीरे बच्चों द्वारा भी शिक्षक या एक-दूसरे के लिए संदेश लिखने के रूप में नज़र आती है। इसी प्रकार पुस्तकसूची में हर सप्ताह पढ़ी गई कहानी और कविताओं का नाम लिखना भी लेखन का अर्थपूर्ण तरीके से एक प्रयोग है।

लेखन को अपने विचार, कल्पनाओं और अनुभवों की अभिव्यक्ति के लिए एक माध्यम समझा जाना आवश्यक है। यह दृष्टिकोण प्रारंभिक साक्षरता की नींव है और पढ़ने-लिखने का यह नज़रिया ही अर्थपूर्ण अधिगम के लिए महत्वपूर्ण है।

शुरुआती लेखन

उन लाखों बच्चों में से, जो हर साल पहली कक्षा में दाखिला लेते हैं, अधिकांश ऐसे घरों और परिवेश से आते हैं जहाँ पढ़ने-लिखने को लेकर बच्चों के अनुभव समृद्ध नहीं होते। ऐसी स्थिति में शिक्षकों के लिए यह अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है कि वे दो बातों का खास ध्यान रखें–बच्चों के शाला में आने से पूर्व के अनुभवों के मायने समझना और इन अनुभवों को शाला के कार्य की नींव बनाना। बच्चों के लिए दैनिक अनुभव ही अमूल्य जानकारी के स्रोत हैं जिन्हें कक्षा में बड़े ही सकारात्मक तरीके से आगे बढ़ाना चाहिए। यह समझ बनाना इसलिए ज़रूरी है ताकि शाला में आने से पूर्व बच्चों के पास उनके अनुभवों का जो अथाह भंडार है उसे वे कक्षा में पर्याप्त स्थान दे सकें। इन अनुभवों का उपयोग सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में कर सकें। क्या हम ऐसा कर पाते हैं?

हम यह समझते हैं कि पढ़ना-लिखना मूल रूप से विद्यालय में ही शुरू होता है पर ऐसा नहीं है। हमारे घरों में और आस-पास लिखत/प्रिंट सामग्री मौजूद है, बस ज़रूरत है तो सिर्फ़ ध्यान देने की। घर के बाहर लिखा नंबर, घर की दीवारों पर बने लोकचित्र (मांडना), कैलेंडर, स्टोव पर लिखा कंपनी का नाम, बर्तनों पर उकेरा गया घर के मुख्य सदस्य का नाम, बाजू पर नाम के टेटू चिह्न, अखबार का पन्ना, सामान खरीदने पर मिली पर्चियाँ, मंजन का डिब्बा, आदि। हर बच्चे के आस-पास लिखत/प्रिंट सामग्री मौजूद है–हाँ, वह कम या ज़्यादा हो सकती है। महत्वपूर्ण यह है कि उस लिखत/प्रिंट सामग्री पर कितना ध्यान दिया जा रहा है। यहाँ मूल बात यह है कि बच्चों में यह समझ बन जाती है कि लिखत/प्रिंट सामग्री अर्थपूर्ण है, क्योंकि अधिकतर वह लिखत/प्रिंट सामग्री उस चीज़

का नाम होता है या उस चीज़ के बारे में होता है जिस चीज़ पर वह प्रिंट मौजूद होता है। इस तरह लिखने-पढ़ने के बारे में कई अवधारणाएँ बच्चे में स्कूल आने से पहले ही बन जाती हैं।

राहुल रोज़ अपने चार साल के भाई रमन को विद्यालय में साथ ले आता। रमन रोज़ आकर कक्षा में एक कोने में बैठ जाता और कक्षा में हो रहे कार्य को देखता रहता। एक दिन वह उठकर शिक्षिका के पास गया और बोला, ''तुम मुझे मेरा नाम लिखना सिखाओगी?''

शिक्षिका ने उससे पूछा, ''वह नाम लिखना क्यों सीखना चाहता है?'' कक्षा में एक कोने में टँगी हुई किताबों की तरफ़ देखते हुए बच्चे ने भोलेपन से कहा, अगर मैं अपना नाम लिखना सीख जाऊँगा तो कहानी की किताबें पढ़ सकूँगा।"

रमन को लगता था कि अपना नाम लिखना सीख जाएगा तो किताबें पढ़ सकेगा। उसके इस तर्क का एक आधार है। कक्षा में वह यह देखता था कि सभी बच्चे किताबें पढ़ने का प्रयास करते थे और कुछ न कुछ लिखते थे।

रमन का यह तर्क इस बात की ओर संकेत करता है कि सुनने-बोलने-पढ़ने-लिखने में एक संबंध होता है। अब ज़ाहिर-सी बात है कि रमन के हाथ में पेंसिल दी जाए तो वह कागज़ पर कुछ-न-कुछ बनाएगा ज़रूर, क्योंकि उसका तर्क हमें बताता है कि वह लिखत की अर्थपूर्णता को समझता है और जानता है कि **बोली गई बात को लिखा जा सकता है और लिखी गई बात को पढ़ा जा सकता है।** अब जब रमन पेंसिल लेकर कागज़ पर कुछ लिखेगा तो हो सकता है वह कुछ ऐसा हो –

चित्र 1

चित्र 2

क्या हम इसे लिखना मानेंगे?

अगर हम कागज़ पर बने इन निशानों को किसी वयस्क की नज़र से देखेंगे तो शायद इसे लिखना कभी नहीं कह सकेंगे। यह एक वयस्क के लेखन जैसा प्रतीत नहीं होता इसलिए हम इसमें कोई अर्थ नहीं देख पाते। लेकिन अगर हम एक बच्चे की नज़र से देखेंगे तो इन आड़ी-तिरछी लकीरों में हमें एक अर्थ छिपा मिलेगा। उन शुरुआती महीनों में जब बच्चों का पेंसिल या रंग और कागज़ के साथ रिश्ता नया-नया ही होता है, बच्चे ऐसी आड़ी-तिरछी

लकीरों द्वारा ही अपने मन के विचारों और कल्पनाओं को कागज़ पर उतारते हैं। इन बिंदुओं, गोल आकृतियों एवं लकीरों में बच्चे सूरज से लेकर घास तक एवं अपने नाम से लेकर कहानी तक, सभी कुछ लिख देते हैं।

जिस तरह बच्चे एक स्वाभाविक प्रक्रिया के तहत ज़मीन पर घुटनों के बल चलते हैं, सहारा लेकर खड़े होते हैं, फिर चलना सीखते हैं उसी तरह पढ़ने-लिखने की प्रकिया के तहत भी कुछ ऐसे पड़ाव आते हैं जो स्वाभाविक हैं। जब बच्चा पहला शब्द बोलता है तो घर में खुशी की लहर-सी दौड़ जाती है। सभी उस बच्चे को घेरे यह उम्मीद करते हैं कि वह कब एक और शब्द बोलेगा। पर सोचने की बात यह है कि हम उसी बच्चे को तब क्यों नहीं उम्मीद भरी नज़रों और उत्साह से देखते हैं जब वह पहली बार पेंसिल पकड़कर एक लकीर खींचता है। **एक बच्चे के लिए किसी लिखित प्रतीक का अर्थ बनाना या ज़मीन, दीवार अथवा कागज़ पर पहली रेखा खींचना एक बहुत बड़ी उपलब्धि है–एक कदम है जो बच्चे ने उठा लिया है, एक पड़ाव पार करने की तरफ़।**

सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना, ऐसे कौशल हैं जिनमें बच्चे धीरे-धीरे प्रगति करते हैं। बच्चे से यह अपेक्षा करना कि वह किताब खोलकर सीधे ही फ़र्राटे से पढ़ ले एवं ध्वनि संकेतों को जोड़कर शब्द और वाक्य लिख सके, हमारी उस सोच का प्रतीक है जहाँ हम बच्चे को एक मशीन मान लेते हैं और पढ़ने-लिखने की प्रक्रिया को एक यांत्रिक कौशल। जबकि पढ़ने-लिखने को बच्चों के अनुभवों से जोड़े रखना चाहिए और कल्पनाओं तथा विचारों को व्यक्त करने का ज़रिया बनाए रखना चाहिए जो कि शुरुआत में इन्हीं आड़ी-तिरछी रेखाओं के माध्यम से ही प्रकट होते हैं। (चित्र 3, 4, 5, 6)

अनु ने अभी हाल ही में पेंसिल पकड़नी शुरू की है। वह पेंसिल को अपनी चारों उँगलियों के बीच में ज़ोर से दबा लेती है और जिस तरह चाहा, वैसे ही घुमा देती है।

काशवी 2½ साल की है और उसे मिट्टी से खेलने में बहुत आनंद आता है। कभी तो मिट्टी गीली कर गोले बनाना शुरू कर देती है तो कभी लकड़ी लेकर लकीरें बना देती है।

चित्र 3

चित्र 4

चित्र 5

चित्र 6

विशु को उसके बड़े भाई ने वृत्त बनाना सिखाया है। आजकल विशु हर चीज़ को गोल बनाता है, चाहे वह टेलीफ़ोन हो या पलंग।

हममें से अधिकांश लोग बच्चों के इस तरह के काम को निरर्थक या उन बच्चों के मनगढ़ंत खेल समझकर कोई अहमियत नहीं देते। पर बच्चों की ये छोटी-लंबी, आड़ी-तिरछी, गोल लकीरें ही उनके मन की बातें हैं। बच्चों की ये लकीरें हमसे बहुत कुछ कहती हैं, उसी प्रकार जिस प्रकार हमारी किताबों में लिखे शब्द और वाक्य। बस फ़र्क इतना है कि किताब का प्रिंट हम पढ़ लेते हैं और इन लकीरों को हम समझना ही नहीं चाहते।

अर्जुन ने यह चित्र बनाया है जिसमें उसने बादल और बारिश का चित्र बनाया बनाई। यहाँ अर्जुन के मन में बादल का दृश्य सहज है और जब अर्जुन ने चित्र दिखाया तो उसकी अपेक्षा यही थी कि इसे देखकर दूसरे भी बादल और बारिश ही मानें। जिस प्रकार चित्र में उसे बादल और बारिश की आकृति दिख रही है उसी प्रकार यह गलत भी नहीं है। यहाँ सवाल यह नहीं कि बच्चे चित्रों में क्या बना रहे हैं, सवाल यह है कि हम बच्चों के चित्रों/लेखन को किस तरह देख रहे हैं।

हर बच्चे को अपनी बात को आड़ी-तिरछी लकीरों में उतार पाने में जो आनंद मिलता है, वह अध्यापक द्वारा बोर्ड पर लिखे हुए काम की नकल करने से ज़्यादा संतोषजनक होता है। हमने भी कभी-न-कभी अपने मन की बात लिखकर अभिव्यक्त करने में संतोष और उपलब्धि का एहसास किया होगा। तो सवाल उठता है कि बच्चों को इस एहसास से क्यों वंचित किया जाए। बच्चों को भी कक्षा में अभिव्यक्ति के अवसर मिलने चाहिए। बच्चों का मन भी बहुत सारी बातें कहने, बताने, बाँटने के लिए उत्सुक होता है। बस तलाश है उन अवसरों की जब उनकी बातों को सराहा और समझा जाएगा। शुरुआती दौर में बच्चों के लिए आड़ी-तिरछी लकीरें अभिव्यक्ति का एक माध्यम होती हैं। इन लकीरों में बातें हैं, अर्थ हैं, भाव हैं और पारंपरिक लेखन की ओर बढ़ने की क्षमता और विश्वास है। **बच्चों की आड़ी-तिरछी लकीरें पढ़ने-लिखने की प्रक्रिया का एक बेहद ज़रूरी हिस्सा हैं। अगर हम इन आड़ी-तिरछी लकीरों को नहीं सराहेंगे तो बच्चे पढ़ने-लिखने की यांत्रिकता में ही उलझकर रह जाएँगे।** बच्चों की इन पहली लकीरों को कक्षा में बिना रोक-टोक स्वीकारना और उस पर बातचीत करना महत्वपूर्ण है, क्योंकि ये लकीरें बच्चों के लेखन के वे पहले महत्वपूर्ण पड़ाव हैं जहाँ बच्चा पढ़ने-लिखने को सार्थकता से देख रहा है। वह यह समझ रहा है कि **मन की बात को लिखा जा सकता है और लिखी गई बात को पढ़ा जा सकता है।**

अब मन में सवाल उठ रहा होगा कि आड़ी-तिरछी लकीरों से बच्चे आगे कैसे बढ़ेंगे?

लेखन की इस प्रक्रिया में बच्चों का आगे बढ़ना इस बात पर निर्भर करता है कि बच्चों को ऐसा माहौल

चित्र 7

कितना मिल रहा है जो सार्थक 'प्रिंट' से समृद्ध है। यहाँ 'प्रिंट' से आशय सिर्फ़ दीवारों पर कहानियों, कविताओं के चार्ट बनाकर चिपका देने से नहीं है। प्रिंट की सार्थकता के मायने तब सिद्ध होते हैं जब उस प्रिंट (जैसे–कहानी, कविता आदि की किताबें, चार्ट, कक्षा में पढ़ने–लिखने से जुड़ी अन्य सामग्री) का बच्चों की रुचि एवं आवश्यकता के अनुसार भरपूर इस्तेमाल किया जा रहा हो।

कक्षा में पढ़ने की सामग्री के साथ सार्थक लेखन के अनगिनत मौके जुड़े हैं। जैसे-जैसे बच्चे लिखते हैं, वे प्रिंट को बारीकी से देखते हैं और अक्षर-ध्वनि के संबंध पर गौर करते हैं। उनकी यह समझ बननी शुरू होती है कि बाएँ से दाएँ की ओर पढ़ते और लिखते हैं (जैसे–देवनागरी में) पढ़ने को लेकर यह समझ बच्चों के लेखन में भी झलकती है। आइए, बच्चों के लेखन के दिए गए कुछ नमूनों में इसे देखने का प्रयास करते हैं–

यह प्रिया का लेखन है। प्रिया ने जब यह लिखा तो दाएँ से बाएँ की ओर लिखा। अगर हम कागज़ पर देखें तो दाईं ओर ज़्यादा कार्य किया गया है, क्योंकि शुरुआत दाईं ओर से की गई है। लेखन कार्य में बनी आकृतियाँ भी दाईं ओर से शुरू की गई थीं। प्रिया की यह समझ अभी पुख़्ता नहीं हो पाई है कि बाएँ से दाएँ की ओर पढ़ा और लिखा जाता है। प्रिया को कहानियों की किताबों एवं सार्थक प्रिंट से जोड़े रखना होगा तथा पढ़ने और लिखने के उद्देश्यपूर्ण अवसर देने होंगे। (चित्र 8)

इस लेखन में प्रिया ने कुछ अक्षर भी लिखे हैं। प्रिया ने लिखने के बाद बताया नहीं कि क्या लिखा है? बस इतना कहा, मैं लिख रही हूँ!" प्रिया द्वारा अक्षरों की आकृति बनाना इस बात की ओर संकेत करता है कि उसकी यह समझ बनी है कि **लिखना अपनी बात को कहने का एक सार्थक माध्यम है।**

चित्र 8

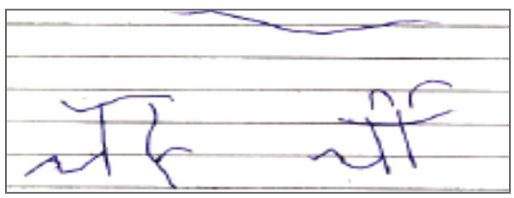

चित्र 9

तनिष्ठा (चित्र 9) ने लिखना चाहा कि **'छिपकली चींटी को खा गई'**। उसने अपनी पूरी बात दो शब्दों में लिखी जिसमें पहला शब्द 'छिपकली' है और दूसरा 'चींटी', जो उसकी बात के दो मुख्य विषय हैं। तनिष्ठा का लेखन यह बताता है कि अभी उसकी ध्वनि-संकेत की समझ बन रही है। उसने ध्वनि को ध्यान से सोचकर लिखने का प्रयत्न किया, जैसे – **'छ'** के लिए **'चह'** लिखा और चींटी के लिए **'चीं'**। तनिष्ठा द्वारा 'छिपकली' और 'चींटी' अलग-अलग लिखना उसकी वाक्य और शब्द-संरचना की समझ को व्यक्त करता है। ध्वनि संकेत की समझ से जुड़े कुछ अन्य उदाहरण हैं – **'दूध'** को **'दूद'** लिखना और **'चूहा'** को **'चहाह'** लिखना।

हर्ष (चित्र 10) और मानसी (चित्र 11) के लेखन, स्ववर्तनी (Invented spelling) लेखन के दो उदाहरण हैं जहाँ अपनी बात को लिखने का उनका प्रयास नज़र आ रहा है। इन उदाहरणों में बच्चों ने वर्तनी की खोज का प्रयास किया है। मानसी और हर्ष दोनों ने ही मज़ेदार बातें लिखी हैं जिनसे उनका जुड़ाव है। हर्ष ने साँप का चित्र बनाया और **'साँप अछ'** लिखा। जब उसकी शिक्षिका ने उससे पूछा कि उसने क्या लिखा है तो हर्ष ने बताया उसने **'साँप अच्छा लगता है'** लिखा है जो शिक्षिका ने उसके लेखन के नीचे लिख दिया। हर्ष ने अपनी बात के मुख्य शब्द लिखने की कोशिश की है। मानसी और हर्ष दोनों ही पारंपरिक लेखन की ओर प्रगति कर रहे हैं। उनकी ध्वनि-संकेतों की समझ बन रही है। मानसी के लेखन को ध्यान से देखें तो मानसी ने कुछ शब्द जैसे **'कपड़ी'**, **'उतरसे'**, **'कटन'**, बड़े ही आत्मविश्वास से लिखे हैं, जबकि **'राजउप'** और **'दतकरच'** के आस-पास बने बिंदु यह बताते हैं कि लेखक के मन में उलझन है। मन का अविश्वास लेखन में भी झलक ही रहा है। इस समय मानसी के साथ कुछ ऐसी गतिविधियाँ करनी होंगी जिनके द्वारा उसका ध्यान ध्वनि-संकेतों की ओर केंद्रित किया जा सके जिससे उसका लेखन और भी समृद्ध हो जाए।

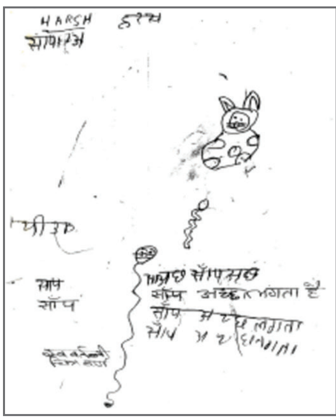

चित्र 10

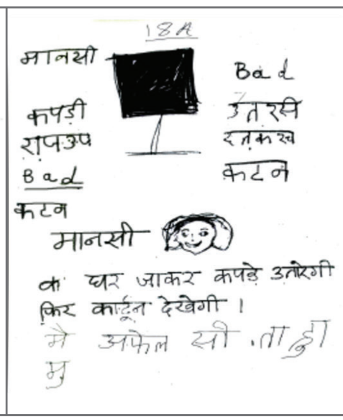

चित्र 11

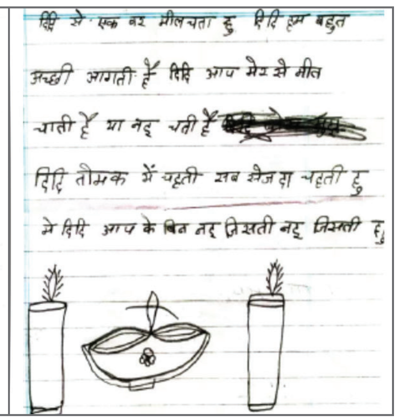

चित्र 12

पूनम (चित्र 12) ने लेखन में अपने मन के भाव बहुत खूबसूरती से कागज़ पर उतारे हैं और अपनी बात को बहुत दिलचस्पी से लिखा है – 'दिदि तोमक में चहती सब सेज दा चहती हु मे दिदि आप के बिन नइ जिसती नइ जिसती हु'। पूनम भी स्ववर्तनी से पारंपरिक लेखन की ओर बढ़ रही है। कई जगह शब्द-संरचना की सही छवि वर्तनी में उभरकर आ रही है, जैसे – दिदि, बहुत, अच्छी, है, बिन'। कई जगह शब्दों की मुख्य ध्वनियों को ही लिखा है। अभी वह ध्वनि और संकेतों के सबंधों को समझ रही है। अपने विचारों को प्रवाह में लिखने के प्रयास में कई शब्दों को अधूरा भी छोड़ा है। इसका यह कारण हो सकता है कि कई बार बच्चे के मस्तिष्क में बातें इतनी जल्दी-जल्दी आगे बढ़ती हैं कि उनकी कलम उस गति का मुकाबला नहीं कर पाती। पूनम का सार्थक प्रिंट से जुड़ाव जितना ज़्यादा होगा और पढ़ने-लिखने के निरंतर मौके जितने अधिक मिलते रहेंगे, उतना ही उसका लेखन परिपक्व होगा।

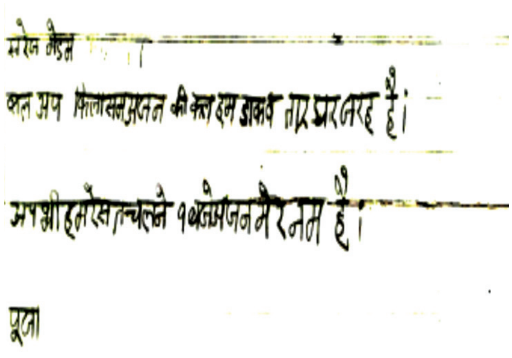

चित्र 13

पूजा ने अपनी अध्यापिका सरोज को पत्र लिखकर डाकघर चलने के लिए आमंत्रित किया है। पूजा के मन की बात उसके लेखन से हमारे मन तक पहुँच रही है। भाषा में सरलता और स्पष्टता है। पूजा अभी स्ववर्तनी के उस पड़ाव पर है जहाँ शब्दों की मुख्य ध्वनियों की समझ उसके लेखन में नज़र आ रही है। पूजा का ध्यान मात्राओं के ध्वनि-संकेतों की ओर केंद्रित करने की ज़रूरत है। पूजा का कई शब्दों को जोड़कर लिखना यह स्पष्ट करता है कि पूजा की यह समझ अभी बन रही है कि दो शब्दों के बीच में थोड़ी जगह छोड़ी जाती है। पर इससे उसे अपने मन की बात संप्रेषित करने में बाधा नहीं हुई है।

बच्चों के लेखन के ये सभी नमूने लेखन प्रक्रिया के कुछ पड़ाव भी दर्शाते हैं, जैसे–आड़ी-तिरछी लकीरों में कुछ आकृतियों का उभरना, अक्षरों का दोहराव, बाएँ से दाएँ की ओर लिखना, ध्वनि-संकेतों का संबंध आदि। ये पड़ाव मोटे तौर पर हैं ताकि लेखन प्रक्रिया के बारे में हमारी समझ बन सके। यह बात ध्यान रखनी होगी कि प्रत्येक बच्चे का सीखने का तरीका अलग होगा और प्रगति का समय भी एकसमान नहीं होगा।

ऐसी स्थिति में शिक्षक को धैर्य रखना होगा और प्रत्येक बच्चे की प्रगति के संग अपने को जोड़े रखना होगा। सबसे महत्त्वपूर्ण है – अपने बच्चों पर विश्वास और भरोसा करना। शिक्षक की अहम भूमिका निभाते हुए, बच्चों के लेखन में गलतियाँ ढूँढ़ने की बजाय उनके लेखन को

इस नज़र से देखना होगा कि बच्चे किस पड़ाव पर हैं और उन्हें प्रगति की ओर ले जाने के लिए किस प्रकार की मदद की ज़रूरत है।

यह बेहद ज़रूरी है कि बच्चों को लिखने के लिए ज़्यादा से ज़्यादा मौके दिए जाएँ। लेखन बाल-साहित्य, बातचीत या किसी गतिविधि से जुड़ा हो सकता है। ज़रूरी यह है कि लेखन का उद्देश्य बच्चों के लिए सार्थक हो। लेखन की यह प्रक्रिया आसान नहीं है और इस प्रक्रिया में बच्चों की प्रगति को अंकों से नहीं मापा जा सकता और यह हमारा उद्देश्य है भी नहीं। हमारा उद्देश्य पढ़ने-लिखने की प्रक्रिया को सार्थक बनाना और बच्चों की क्षमता को मान्यता देना है ताकि बच्चे विद्यालय में हो रही विभिन्न गतिविधियों से जुड़ सकें और पढ़ने-लिखने की प्रक्रिया को बेमानी न समझें। हमारा मकसद बच्चों को स्थायी पाठक बनाना है ताकि पढ़ना-लिखना स्कूल का ही नहीं, बल्कि उनके जीवन का भी हिस्सा बने।

शिक्षक की तैयारी–कार्य योजना

शिक्षक अपनी कक्षा की स्थिति सुविधाओं, बच्चों और बच्चे के मनोभावों तथा उसकी परिस्थिति को सबसे ज़्यादा जानता है। प्रारंभिक साक्षरता का उद्देश्य कक्षा में प्रिंट समृद्ध माहौल बनाना, अन्य बच्चों को पढ़ने-लिखने के सार्थक मौके देना, साथ ही इस प्रकिया को आनंददायी बनाना है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए शिक्षक की सक्रिय भूमिका है। वह कार्य योजना के रूप में अपनी पूर्व तैयारी के महत्त्व को समझ सकता है। किसी भी कार्यक्रम को आयोजित कराने से पहले उसकी एक उपयुक्त योजना बनाना ज़रूरी है। उदाहरण के लिए, यदि आप किसी ठंडे प्रदेश में यात्रा करने जा रहे हैं और आपने इसकी पहले से कोई तैयारी नहीं की या योजना नहीं बनाई तो गर्म कपड़ों के अभाव में आपकी यात्रा का उत्साह और उसका मज़ा तो निश्चित तौर पर किरकिरा हो जाएगा। कोई भी योजना तभी सफ़ल होती है जब वह परिस्थिति और उद्देश्य के अनुकूल बनाई जाती है। अतः कार्य योजना इस पूरे कार्यक्रम का सबसे अहम हिस्सा है। कार्य योजना वह ज़रिया भी है जिसके माध्यम से शिक्षक बच्चों के लिए पढ़ने-लिखने के विभिन्न सार्थक अवसर प्रदान करता है। बच्चे कैसे पढ़ना-लिखना सीखते हैं – केवल इस बात की समझ होना ही पर्याप्त नहीं है। यह समझ होना भी ज़रूरी है कि पढ़ने-लिखने के अवसरों, प्रक्रियाओं को कक्षा में किस प्रकार क्रियान्वित किया जाए। इस तरह बच्चों के पढ़ने-लिखने के बारे में बनी समझ कार्य योजना के बिना अधूरी है। इसका मुख्य कारण यह है कि कार्य योजना बनाते समय हम सजग होकर विभिन्न प्रक्रियाओं को क्रियान्वित करने के व्यावहारिक पहलुओं के बारे में सोचते हैं, जैसे – गतिविधि का उद्देश्य क्या है? गतिविधि करने के लिए क्या-क्या सामग्री जुटानी होगी? गतिविधि से जुड़ी चर्चा किस तरह होगी? गतिविधि के लिए कितना समय देना है? आदि। इन सभी मुख्य बातों को ध्यान में रखते हुए कार्य योजना बनाई जाती है। यह कार्य योजना समय-सारिणी से बहुत भिन्न है। समय-सारिणी में तो केवल

यह तय किया जाता है कि किस विषय को कितना समय देना है और कब देना है। परंतु उस निर्धारित समय में आप क्या कराएँगे और उसे कैसे व्यवस्थित करेंगे – यह कार्य योजना का हिस्सा है। यह कार्य योजना रोज़ाना कराई जाने वाली गतिविधियों की बनानी होगी, किसी खास अवसर या प्रक्रिया (जैसे केवल परीक्षा आदि) की ही नहीं।

यहाँ प्रारंभिक साक्षरता कार्यक्रम से संबंधित कई अवसरों का उल्लेख है जिन्हें ध्यान में रखते हुए शिक्षक अपनी दैनिक कार्य योजना को व्यवस्थित रूप दे सकते हैं। एक सुगठित और व्यवस्थित कार्य योजना निश्चित रूप से बच्चों की पढ़ने-लिखने की प्रक्रिया को सार्थक और रुचिकर बनाने में योगदान देगी।

रोज़ कीजिए

आज की बात	रीडिंग कॉर्नर के लिए समय	कहानी-कविता संबंधित गतिविधियाँ	अपनी बात/लेखन साझा करना	लिखने के मौके

1. आज की बात

बच्चों से बातचीत के द्वारा **'आज की बात'** रोज़ बोर्ड पर लिखें। आज की बात में ऐसी बातों पर चर्चा की जा सकती है जो रोज़मर्रा की ज़िंदगी का हिस्सा हैं, जैसे – गाँव में किसी के घर दावत, शादी, गाँव में बारिश होने पर विभिन्न प्रकार की क्रियाएँ, खेतों में हल जोतना, बुआई करना, फ़सल काटना आदि।

अब तक आज की बात को हम एक वाक्य में ही समेट रहे थे। कक्षा एक के अंत या कक्षा दो तक आते-आते बच्चे 'आज की बात' से पूर्णतः परिचित हो चुके हैं। तो समय है 'आज की बात' में कुछ बदलाव करने का! 'आज की बात' को एक ही वाक्य में समेटना ज़रूरी नहीं है। अगर बच्चे अपनी बात को विस्तार से बता रहे हैं तो यह 2-3 वाक्यों में भी लिखी जा सकती है।

- **'आज की बात'** को कहानी या कविता के माध्यम से आगे बढ़ाया जा सकता है और पढ़ने-लिखने की एक मज़ेदार गतिविधि बन सकती है, जैसे 'मिली की साइकिल'। कहानी सुनाने के बाद बच्चे अपने खुद के साइकिल चलाना सीखने के अनुभवों को 'आज की बात' गतिविधि में शामिल कर सकते हैं, जैसे – रमन कल साइकिल चला रहा था। वह कई बार गिरा पर फिर उसने साइकिल चला ही ली। अगर इस तरह की कोई बात 'आज की बात' में आती है तो यह चर्चा का एक बहुत अच्छा विषय बन सकता है जहाँ बच्चे अपने साथ जुड़े ऐसे अनुभव बाँटेंगे जिनसे वे डरते हैं या जिन्हें बताने में संकोच करते हैं। कक्षा 1 में ऐसे अनुभवों के बारे में चर्चा कर सकते हैं और कक्षा 2 में अपने अनुभव लिखने को कह सकते हैं। यदि 'आज की बात' की चर्चा से ऐसी कुछ रोचक बातें निकल कर आएँ, जिसे बच्चों के साथ मिलकर कविता में बदला जा सकता है

तो अवश्य बढ़ाएँ, जैसे – 'मैडम की घड़ी करे चम-चम-चम' और इसे आगे बढ़ाया जा सकता है-

मैडम की घड़ी करे चम-चम-चम
रहीम की डिबिया करे डम-डम-डम
अनु के पैर करें धम-धम-धम

- कभी-कभी बच्चों को स्वयं 'आज की बात' बोर्ड पर लिखने का मौका दें। शिक्षक सिर्फ़ वहाँ मदद करें जहाँ बच्चे अटक रहें हों, जैसे- अगर बच्चे लिखना चाहें 'राहुल कल झूले से गिर गया।' और 'झूले' या कोई अन्य शब्द या अक्षर न लिख पा रहे हों तो पहले बच्चों को एक-दूसरे की मदद करने दें। उसके बाद शिक्षक बच्चों को कहें कि कक्षा में लगे चार्ट, सामने दिख रही कहानी की किताब आदि में यह शब्द ढूँढ़ें। अगर यह शब्द/अक्षर न मिले तो शिक्षक उन्हें लिख कर दें। इस तरह से मदद करने की प्रक्रिया से बच्चे स्वयं अपने हल ढूँढ़ने के लिए प्रेरित होंगे और साथ ही लिखत की बारीकियों की ओर भी उनका ध्यान जाएगा। ऐसे मौके कक्षा 2 के बच्चों के साथ ज़्यादा दोहराए जा सकते हैं।

2. रीडिंग कॉर्नर में पढ़ने की आज़ादी

पढ़ने के सफ़र की शुरुआत बच्चों के अनुरूप पुस्तकें उपलब्ध कराने और उन्हें पढ़ने के अवसर देने से होती है। इस प्रक्रिया को साकार करने के लिए पुस्तकों और कई तरह की पठन सामग्री का बच्चों के पास होना ज़रूरी है। इसे ध्यान में रखते हुए कक्षा 1 और 2 में रीडिंग कॉर्नर बनाया गया है। यह पुस्तक कोना बच्चों की अपनी जगह है जहाँ उन्हें बैठने, स्वयं पुस्तकें चुनने और पढ़ने की पूरी आज़ादी होगी। यह 'रीडिंग कॉर्नर' भले ही एक छोटे पुस्तकालय-सा दिखता हो परंतु यह विद्यालयी पुस्तकालय से भिन्न है।

उपयोग

- रीडिंग कॉर्नर बच्चों को स्वतंत्र रूप से पढ़ने का अवसर देता है।
- बाल साहित्य और बरखा के अलावा पेंसिल, कागज़, चार्ट पेपर, रंग, चित्र बनाने, रंग भरने और कुछ लिखने के लिए भी रखे जा सकते हैं।
- बच्चों द्वारा चित्रों और कहानियों से बनाई हुई किताब, पत्रिकाएँ और अन्य लिखित सामग्री को कॉर्नर में जोड़ने की योजना बनाइए। इस प्रकार से आपका कॉर्नर और समृद्ध हो सकता है।
- इस कोने को कक्षा के पठन-पाठन कार्यक्रम से जोड़ते हुए इस्तेमाल करने की आज़ादी दें, जैसे-अगर आप पाठ्यपुस्तक में से 'सूरज' कविता पढ़ा रहे हैं तो उस कविता से मिलती-जुलती कहानी और कविता की किताब का पढ़ने के कोने में इस्तेमाल किया जा सकता है।
- शिक्षक स्वयं भी इस रीडिंग कॉर्नर के पाठक बनें और बच्चों द्वारा किताब पढ़ते समय उनके सहभागी बनें।

- रैक के अलावा गत्ते से बना बॉक्स बनाकर रख सकते हैं जिससे बच्चे उसका इस्तेमाल किताबें रखने के लिए करें।
- कोने के रख-रखाव की ज़िम्मेदारी बच्चों को दें।
- कोने में नवीनता लाने के लिए 'पढ़ने का कोना' को एक नाम दे सकते हैं। समय-समय पर पुस्तकें प्रदर्शित करने की व्यवस्था भी बदली जा सकती है।
- पढ़ने के कोने में बच्चों की रुचि से जुड़ी बहुत-सी सामग्री रखी जा सकती हैं, जैसे – कठपुतली, मुखौटे, मिट्टी के खिलौने, कंचे, कंकड़, बोतल के ढक्कन आदि। इनसे कॉर्नर जीवंत होगा और ऐसी वस्तुएँ उन्हें बातचीत करने, कुछ नया बनाने एवं लिखने के मौके प्रदान करेंगी।

3. कहानी

किसी भी कहानी के साथ हम बहुत सारी गतिविधियाँ करा सकते हैं। कहानी के साथ करवाई जा रही गतिविधियों को हम तीन भागों में बाँट सकते हैं –

- कहानी सुनाने से पूर्व
- कहानी सुनाते समय
- कहानी सुनाने के बाद

कहानी सुनाने से पूर्व

कहानी पढ़ने से पहले कोई भी गतिविधि कराने का मुख्य उद्देश्य यह है कि कहानी के प्रति बच्चों की रुचि बनाई जाए और कहानी की कथावस्तु से परिचित कराया जाए ताकि जब बच्चे किताब खोलें तो उनमें आत्मविश्वास और पढ़ने की उत्सुकता हो।

कुछ क्रियाएँ जो हम कर सकते हैं –

(क) कहानी सुनाने से पूर्व **कहानी एवं लेखक का नाम बोर्ड पर अवश्य लिखें** तथा बच्चों को पढ़कर बताएँ।

(ख) **कहानी के आवरण पृष्ठ पर चर्चा करें** और कहानी के बारे में **अनुमान लगाने के लिए कहें**। यह कार्य बातचीत के द्वारा किया जा सकता है। साथ ही बच्चों के विचारों को बोर्ड पर लिखा जा सकता है।

(ग) **बच्चों के साथ मिलकर कहानी सुनाने के उद्देश्य के बारे में बातचीत करें।** बच्चों के साथ मिलकर यह चर्चा करें कि वे कौन-सी कहानी सुनेंगे और क्यों?-पहली बार कहानी सिर्फ़ मज़े के लिए सुनाएँ। दूसरी बार बच्चों से कुछ मुख्य बातों पर ध्यान देने को कहें, जैसे – कहानी के पात्रों के बारे में ध्यान से सुनना, जगह का विवरण आदि।

कहानी पढ़ते समय

- शिक्षक चित्रों को दिखाते हुए कहानी पढ़कर सुना सकते हैं।
- शिक्षक बीच-बीच में रुककर बच्चों के साथ मिलकर कहानी में आगे होने वाली घटना के बारे में अनुमान लगा सकते हैं।
- जब दूसरी या तीसरी बार कहानी सुनाई जा रही हो तो कहानी के विभिन्न घटनाक्रमों को अलग-अलग लिखकर बच्चों को

कागज़ दिए जा सकते हैं और बच्चों को कहानी पढ़ने को कहा जा सकता है। बच्चों को कहानी के घटनाक्रम के अनुसार पढ़ना होगा। पहले वह बच्चा पढ़े जिसके पास कहानी की पहली घटना है, फिर दूसरा, तीसरा आदि। इस तरह बच्चे पढ़ने में एक दूसरे की मदद करेंगे और एक साथ समूह में काम करने की उनकी आदत भी बनेगी।

- कहानी को एक और मज़ेदार रूप भी दिया जा सकता है। शिक्षक बच्चों से कहे कि आज कहानी पढ़ने में वह 6 गलतियाँ करेंगे और बच्चों को वह गलतियाँ पकड़नी हैं। इस तरह शिक्षक कहानी में 6 गलतियाँ सोच ले जो वह करने वाला है। ये पात्रों के नाम, घटनाक्रम, वस्तुओं को उलटफ़ेर करना हो सकता है या कुछ और जो कहानी में किया जा सके।

कहानी पढ़ने के बाद

- कहानी को नया शीर्षक देना, कहानी के बारे में चित्र बनाना या लिखना।
- कहानी का अभिनय।
- कक्षा 2 में कुछ कहानी-कविता अधूरी छोड़कर बच्चों को आगे बढ़ाने के लिए मौके दें।
- एक ही कहानी पर 2-3 दिन तक चर्चा की जा सकती है, जैसे – एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित कहानी 'घर की खोज' पढ़कर सुनाएँ। बच्चों के साथ मिलकर आस-पास रहने वाले पालतू जानवरों के घरों के बारे में चर्चा करें और बच्चों को सोचने का मौका दें। अगर जानवरों के घर बदल दिए जाएँ तो क्या होगा, जैसे – कबूतर कौवे के घोंसले में रहने लगे तो? चिड़िया चूहे के बिल में चली जाए तो? चींटी के घर में केंचुआ रह पाएगा? अगर गाय हमारी कक्षा में आ जाए तो?
- दूसरे दिन बच्चों को अपने घर का चित्र बनाने को कहें और घर की चीज़ों का नाम लिखने को कहें।
  - तीसरे दिन कक्षा में लिखने के कुछ और मौके तलाशें, जैसे –
  - कहानी के पात्रों से एक नई कहानी बनाना।
  - कहानी के किसी एक पात्र के बारे में विस्तार से लिखना।
  - कहानी के मुख्य शब्दों के उलटे शब्द बनाना और लिखना।
- कहानी में अगर कुछ अक्षर बार-बार कई शब्दों में आ रहे हैं तो कहानी से चुनकर उन अक्षरों को लिखना एवं उनसे बने नये शब्द ढूँढ़ना और बनाना।
- किसी भी **गतिविधि को दोहराया या बढ़ाया जा सकता है**, जैसे- एकलव्य प्रकाशन की कहानी 'टिपिक पाँ भर्र' पढ़ने के बाद बच्चों के साथ मिलकर कक्षा में बैठ आँखें बंदकर, अपने पास की आवाज़ सुनी और महसूस की जा सकती है। फिर कक्षा में सूची बनाई जाए कि किसने कौन-कौन-सी आवाज़ सुनी। यह गतिविधि

कुछ दिन बाद बदलकर दोहराई जा सकती है, जैसे–बच्चों को शाला के बाहर ले जा कर भी यह किया जा सकता है।

- इसी तरह किसी भी **गतिविधि को पुनः दोहराने में संकोच न करें**। पर यहाँ ध्यान रखें कि गतिविधि में रोचकता बनी रहे।

4. अपनी बात और लेखन साझा करना

प्रतिदिन **कम से कम 15 मिनट** बच्चों के साथ बैठकर कक्षा में कराई गई गतिविधि पर चर्चा करें। बच्चों को ऐसा आकाश दें जिसे वे अपने मन की रंग–बिरंगी बातों से भर सकें। लिखने के साथ–साथ प्रतिदिन कक्षा में कुछ समय ऐसा अवश्य निकालें जहाँ कुछ बच्चे अपना लेखन सबको पढ़कर सुनाएँ। अगर प्रतिदिन 4–5 बच्चों को मौका मिलेगा तो सप्ताह में सभी बच्चों के पास एक दिन ऐसा अवश्य होगा जब वे अपना लेखन सबके सामने साझा कर सकेंगे। जब बच्चे अपना लेखन पढ़ें तो पूरा ध्यान उनके विचारों और मन की बात पर दें, तकनीकी पहलुओं पर नहीं।

5. लिखने के मौके

सहयोगी लेखन और स्वतंत्र लेखन-लेखन के दो प्रकार

बच्चों के लेखन के विकास के लिए उन्हें स्वतंत्र रूप से लिखने के मौकों के साथ–साथ ऐसे लेखन के अवसर भी देने होंगे जिसमें बच्चे शिक्षक की सहायता से लेखन करें। शिक्षक की सहायता बच्चे के लेखन को समृद्ध बनाने में मदद करेगी। ऐसे लेखन को हम सहयोगी लेखन कह सकते हैं। शुरुआती स्तर पर दोनों प्रकार के लेखन के मौके बच्चों को मिलने चाहिए। सहयोगी लेखन के द्वारा बच्चों को कुछ नया सीखने के मौके मिलते हैं। चाहे वह शिक्षक की मदद से हो या सहपाठियों की मदद से। स्वतंत्र लेखन के ज़रिए बच्चे लेखन की जो भी समझ बनाते हैं उसकी अभिव्यक्ति करते हैं। इसलिए दोनों प्रकार के मौके हमारे लिए बहुत उपयोगी हैं।

सहयोगी लेखन

किसी कविता या कहानी, जिसमें छोटे–छोटे वाक्य संरचना का दोहराव हो, उसे ढूँढें और बच्चों के सामने उसकी कम से कम दो पंक्तियाँ/अनुच्छेद ब्लैकबोर्ड/चार्ट पर लिख दें। एक–दो बार बच्चों के साथ उसे रोचक ढंग से पढ़ें। उसके बाद बच्चों को उसे आगे बढ़ाने के लिए कहें। कक्षा 1 के लिए आप पूरा वाक्य खुद बोर्ड/चार्ट पर लिख दें और केवल वह जगह खाली छोड़ दें जहाँ पात्र बदल रहे हों और बच्चों से उस जगह को सोचकर भरने के लिए कहें। इसमें हर बच्चा अपनी कल्पना से कुछ भी जोड़ सकता है, उसे मान्यता दें। नई–नई जितनी पंक्तियाँ इस प्रकार बनें उन्हें कविता/कहानी में जोड़ते चलें। शिक्षक खुद भी एक–दो उदाहरण सोचकर आएँ। परंतु बच्चों को केवल उन उदाहरणों को मानने के लिए बाध्य न करें।

उदाहरण –

चींटी ओ चींटी
कहाँ गई थी?
अरे, यहीं थी पास में
चीनी की तलाश में

गाय ओ गाय
कहाँ गई थी?
अरे, यहीं थी पास में
घास की तलाश में।

.... ओ ....

कहाँ गई थी?
अरे, यहीं थी पास में
चूहे की तलाश में।

.... ओ ....

कहाँ गई थी?
अरे, यहीं थी पास में
.... की तलाश में।

शुरुआत में कविता/कहानी में खाली जगह केवल एक-दो नये शब्दों के लिए छोड़ें। उन वाक्यों के लिए जिनमें दोहराव है, उन्हें खाली छोड़ दें ताकि बच्चे उन्हें स्वयं भर सकें। चर्चा करने के बाद बच्चों को पूरी कविता अपनी कॉपी में लिखने को कहें। बच्चों को इस कार्य के लिए पर्याप्त समय दें। बच्चों के साथ की गई चर्चा के बाद जो बातें उभरकर आई हैं उन्हें बोर्ड/चार्ट पर भी लिख दें।

स्वतंत्र लेखन

'स्वतंत्र लेखन' लेखन का वह रूप है जिसमें बच्चा यह खुद तय करता है कि वह अपने मन की कौन-सी बात कैसे व्यक्त करना चाहता है। इस लेखन में बच्चे केवल चित्रों, केवल चित्रों और वाक्यों या केवल शब्दों और वाक्यों के माध्यम से अपने मन की बात लिखने के लिए स्वतंत्र होते हैं। परंतु शुरुआत में इस लेखन में भी शिक्षक को बच्चों की मदद के लिए तैयार होना होगा, जैसे कक्षा में स्वतंत्र लेखन के मौके और माहौल तैयार करना। धीरे-धीरे पढ़ने-लिखने के बढ़ते मौकों के साथ-साथ शिक्षक पर बच्चों की निर्भरता कम होती नज़र आएगी।

स्वतंत्र लेखन के उदाहरण के रूप में एक गतिविधि इस प्रकार हो सकती है – कक्षा में चिट्ठियों का डिब्बा रखें। चिट्ठी लिखने के विषय इस प्रकार हो सकते हैं, जैसे – शिकायत, पसंदीदा काम, नापसंद काम और चीज़ें, माता-पिता के लिए, अपनी खास खूबी बताने के लिए, मोहल्ले और स्कूल की खबरें बाँटने के लिए आदि। इसी प्रकार संदेश-चिट्ठियों वाले सप्ताह में कोई बच्चा डाकिया बनकर सही बच्चे तक उन संदेश-चिट्ठियों को बाँट सकता है। अगर चिट्ठी सीधे शिक्षक के लिए लिखी गई है या किसी ऐसे व्यक्ति/वस्तु के लिए है जो कि बच्चों की पहुँच से बाहर है तो वे स्वयं उसका जवाब लिख दें। शिक्षक चाहें तो इस गतिविधि को अत्यंत रोचक ढंग से कक्षा का एक हिस्सा बना सकते हैं जिसमें हर हफ़्ते शिक्षक चिट्ठी का

संदर्भ भी बदल सकते हैं। चिट्ठी पर आधारित एक और क्रियाकलाप किया जा सकता है, जैसे – शिकायती चिट्ठियों (कक्षा में किसी बच्चे की किताब का खोना, पीने का पानी न होना, किसी का खाना खा लेना, किसी को धक्का देना आदि) पर सुनवाई करवाना। इससे बच्चों के साथ मिलकर चर्चा के द्वारा कक्षा की समस्याओं का हल निकाला जा सकता है। साथ ही इससे धीरे-धीरे बच्चों को भी दूसरों के प्रति अपनी सामाजिक ज़िम्मेदारियों का अहसास होने लगेगा।

कक्षा में प्रारंभिक साक्षरता–कुछ अवसर

- ***चित्रों पर बातचीत***

  बच्चों द्वारा **बनाए गए चित्रों पर उनसे बातचीत करें**, जैसे – उनसे कहें कि वे चित्र बनाएँ, उस पर अपना नाम भी लिखें। चित्र के बारे में कुछ लिखें और अब बच्चों से उसे पढ़ने के लिए कहें। साथ ही आप भी उनके चित्र के बारे में उन्हीं के कागज़ पर लिखें और पढ़कर उन्हें सुनाएँ। यहाँ चित्रों के माध्यम से बच्चों के मन की बात को जाना जा सकता है, जैसे – ऐसा क्या रोचक हुआ कि बच्चे ने वह बिल्ली बनाई? बच्चे का उस चित्र से क्या जुड़ाव है – यह जानना ज़रूरी है। बच्चों की बात को उन्हीं के शब्दों में चित्र के नीचे लिखा जा सकता है। कक्षा 2 में बच्चों द्वारा बनाए गए चित्रों पर उनसे चर्चा करें और चित्र के बारे में वाक्य लिखने में मदद करें।

- ***बच्चों के अनुभवों को लिखना/अनुभव लेखन***

  बच्चों के 'अनुभव लेखन' के कई संदर्भ हो सकते हैं। यदि कक्षा में या स्कूल के आसपास कोई रोचक/रोमांचक घटना घटी है, जैसे – किसी मेंढक का कक्षा में आ जाना, बरसात के दिनों में पास में कोई साँप निकल आना या फिर कक्षा में कराई कोई गतिविधि, जैसे – कुछ नया बनवाना आदि। ये कुछ ऐसे अनुभव हैं जिनसे सभी बच्चे परिचित हैं। बच्चों के इन अनुभवों के बारे में कक्षा में बात की जा सकती है। बच्चों से कहें कि वे पूरे घटनाक्रम को बताएँ। जैसे-जैसे बच्चे अनुभव बताते जाएँ, शिक्षक उसे एक चार्ट पर लिखते जाएँ या किसी कैलेंडर के पिछले खाली भाग पर लिखें और कक्षा में लगाएँ। शिक्षक बच्चों के सहयोग से उँगली रखकर उन सभी अनुभवों को पढ़कर सुनाएँ ताकि बच्चों की यह समझ बन सके कि उनकी बोली गई बात को लिखा और पढ़ा जा सकता है। इसे एक रोचक शीर्षक देने के लिए भी बच्चों को प्रेरित किया जा सकता है। बच्चों को उनके इस अनुभव को कॉपी में उतारने के लिए कहें। साल के अंत में बच्चों के इस अनुभव-लेखन की प्रदर्शनी भी लगाई जा सकती है। अगले दिन से बच्चों के बताए अनुभव को अँगुली रखकर पढ़ें। कक्षा 2 के अंत तक आते-आते बच्चों के साथ

चर्चा के बाद उन्हें स्वयं अनुभव लिखने को कहें।

साल में इस तरह के कम से कम 10 अनुभव-लेखन के अवसर ज़रूर दिए जाएँ।

- ***स्थानीय भ्रमण से जुड़ा लेखन***

  स्थानीय भ्रमण इन उद्देश्यों के लिए हो सकता है –

  1. कहानी या कविता से जुड़ी किसी खास गतिविधि के लिए
  2. कुछ आसपास की चीज़ों को इकट्ठा करने के लिए, जैसे-पत्ते, पत्थर, प्लास्टिक की चीज़ें आदि जिन पर आधारित कक्षा में कुछ गतिविधि करवानी हो।
  3. अपने आसपास की चीज़ों का अवलोकन करने के लिए, जैसे – अलग-अलग तरह के पेड़-पौधे, पक्षी, घर, घोंसले आदि। कुछ मुख्य जगह, जैसे – पोस्ट-ऑफ़िस, खेत-खलिहान, खास अवसर या मौसम में लोगों के कुछ खास क्रियाकलाप देखने के लिए या किसी चीज़ में एक अंतराल के बाद आए बदलाव देखने के लिए आदि।

बच्चों को बाहर सैर के लिए लेकर जाएँ। उन्हें रास्ते में गिरी अलग-अलग तरह की 10 पत्तियाँ बीनने के लिए कहें। वापस आकर बच्चों को अपनी-अपनी पत्तियों का अवलोकन करने को कहें। कक्षा 1 में उन्हें यह भी लिखने को कहें कि उन्हें अपनी पत्ती किस चीज़ के समान लग रही है। बच्चे उसका नाम भी लिखें, जैसे–मछली जैसी, चिड़िया जैसी आदि। शिक्षक बोर्ड पर पूरा वाक्य बच्चों के लिए लिख दें। केवल उस चीज़ के नाम के लिए जगह छोड़ दें जिसकी तरह बच्चों को अपनी पत्ती लग रही है। लिखने में बच्चों को एक-दूसरे की, आसपास लगी लिखत सामग्री की भी मदद लेने को कहें। जो बच्चे शिक्षक से मदद माँगने आएँ, पूरी आत्मीयता से उनकी मदद करें। मदद के वक्त बच्चों का ध्यान उन बातों की ओर आकर्षित करें कि वे क्या जानते हैं बजाय इसके कि वे क्या नहीं कर पा रहे। बच्चों से चर्चा करने के बाद एक उदाहरण भी बोर्ड पर शिक्षक लिख दें और बच्चों को भी वाक्य में लिखने को कहें, जैसे –

मेरी पत्ती .... जैसी लग रही है।

कक्षा 2 के बच्चों को पत्तियों का वर्गीकरण करने और उनके बारे में लिखने को कहें। आप बच्चों से कहें कि पहले वे पत्तियों के वर्गीकरण का आधार अवश्य बताएँ। फिर उन्हीं बातों को उन्हें लिखने को कहें। वर्गीकरण के आधार के रूप में पत्तियों की बनावट, नाप, रंग-रूप, पेड़ों की किस्म आदि का विवरण आ जाएगा और साथ ही उन आकारों को वे किस तरह से देखते हैं, उन्हें वे अपने आसपास की किन चीज़ों से जोड़ रहे हैं–यह भी शामिल होगा। लिखने में मदद के लिए शिक्षक सामूहिक बातों को खुद बोर्ड पर लिख दें और बाकी चीज़ों में बच्चों को एक-दूसरे से या शिक्षक से पूछकर लिखने की

छूट दें। बच्चों का खुद के लेखन में जैसे-जैसे आत्मविश्वास बढ़ेगा, वे ज़्यादा से ज़्यादा स्वतंत्र रूप से लिखने लगेंगे।

साल में कम से कम 3 स्थानीय भ्रमण के अवसर ज़रूर दें।

- ***लेखन से पहले बच्चों के साथ चर्चा करते हुए निम्नलिखित तीन मुख्य बातों पर विशेष ध्यान दें*** –
  - बच्चों के पास लिखने का एक सार्थक उद्देश्य होना चाहिए।
  - बच्चों को यह पता होना चाहिए कि उनके लेखन का पाठक कौन होगा।
  - बच्चों से लेखन के विषय पर बातचीत करनी चाहिए ताकि उनके पास लिखने के लिए कई विचार एकत्र हो जाएँ।

लेखन-कार्य के लिए अलग-अलग पाठक

बच्चों को कोई भी लिखित गतिविधि कराने से पहले इस बात पर चर्चा ज़रूर कर लें कि उनके लेखन का उद्देश्य क्या है और उनके लेखन का पाठक कौन है। मुख्यतः बच्चों की लिखी बातों को शिक्षक ही पढ़ते हैं पर इस लेखन को संवाद और संप्रेषण की दृष्टि से देखना चाहिए। अतः यह ज़रूरी है कि लेखन का उद्देश्य तय करते हुए अलग-अलग पाठकों के लिए लिखा जाए, जैसे–कक्षा के अन्य बच्चे, स्कूल या घर के दोस्त, माता-पिता, पड़ोसी। यहाँ तक कि आधी छुट्टी में आने वाला कुत्ता, स्कूल का पुराना पेड़ आदि भी किसी लेखन के पाठक हो सकते हैं। बच्चे उन्हें संबोधित करते हुए एक ऐसी चिट्ठी लिख सकते हैं जिसमें वे सारी बातें लिखी हुई होंगी जो वे उनसे कहना चाहते हैं। यह बच्चों के लिए एक सार्थक संवाद होगा और इससे बच्चों में यह समझ बढ़ेगी कि अलग-अलग पाठक के लिए लिखने का तरीका अलग होगा। आगे चलकर जब बच्चे औपचारिक और व्यक्तिगत पत्र आदि लिखेंगे तो लिखने के तरीकों के अंतर को खुद समझ पाएँगे।

- ***खाने-पीने की चीज़ों की विधि***

  खाने-पीने की चीज़ों से हर किसी का जुड़ाव होता है इसलिए बच्चों के पढ़ने-लिखने के अवसरों में यह एक ऐसा रोचक विषय है जिसमें बच्चे और बड़े–दोनों को मज़ा आता है। जब हम कक्षा में खाने-पीने की चीज़ों को बनाने की विधि की बात कर रहे हैं तो हमारा उद्देश्य नये-नये पकवान आदि ढूँढ़ना नहीं है बल्कि हमारा उद्देश्य लिखने-पढ़ने के रोचक अवसर देना है। इसलिए ऐसी चीज़ें चुनी जाएँ जो बच्चे रोज़ खाते-पीते हों और बनाने की विधि भी आसान हो, जैसे – नींबू पानी, शरबत, भेल-पूरी, रोटी, चाट बनाना आदि। ऐसी चीज़ें भी चुनी जा सकती हैं जिन्हें कक्षा में बनाना मुमकिन हो और गैस चूल्हे की आवश्यकता न हो। सभी बच्चे अपने घर से थोड़ा-थोड़ा सामान लाएँ, कक्षा में बनाएँ और चखें। इस प्रकिया से गुज़रने के बाद, अध्यापक बच्चों की सहायता से बनाने की विधि बोर्ड या चार्ट पर लिखें और अँगुली रखते हुए उसे पढ़ें। इसके बाद बच्चों को

यह विधि अपनी कॉपी में लिखने के लिए कहा जा सकता है।

कक्षा 2 के बच्चों से यह कहा जा सकता है कि वे अपने घर में बननेवाली चीज़ों का अवलोकन करें, जैसे – दाल, रोटी, चाय, पकवान आदि। अगले दिन कक्षा में इन चीज़ों को बनाने की विधि पर चर्चा करते हुए, उसे लिखने के लिए कहा जा सकता है। विधि लिखने की प्रक्रिया अन्य चीज़ों के साथ भी की जा सकती है, जैसे – कागज़ से नाव बनाना, चिड़िया बनाना, मिट्टी से खिलौने बनाना आदि।

- ***चित्र विवरण***

  बच्चों की रुचि के अनुसार अखबार या पत्रिका में से कुछ चित्र काटकर कक्षा में प्रदर्शित किए जा सकते हैं और इन पर चर्चा की जा सकती है। चित्र आकर्षक हों, चित्रों में बातचीत करने की भरपूर संभावनाएँ हों।

  चित्रों को चुनते समय इन बिंदुओं पर ध्यान देना ज़रूरी है–

  – रोचकता
  – स्पष्टता
  – बच्चों के परिवेश से जुड़ाव
  – किसी भी तरह की हिंसा से मुक्त

  अगर कोई ऐसा चित्र जो बच्चों के परिवेश से सीधा जुड़ा नहीं है तो उस चित्र के बारे में पहले ही बच्चों के साथ बातचीत करें। उदाहरणतः अगर दिल्ली के मैट्रो रेल के बारे में चित्र है तो चित्र दिखाते समय बच्चों को उसके बारे में विस्तार से बताएँ। साथ ही स्थानीय यातायात के साधनों के बारे में भी चर्चा की जा सकती है।

  बच्चों के साथ बैठकर चित्र पर चर्चा करें और बच्चों के विवरण को बोर्ड/चार्ट पर लिखें एवं बच्चों के साथ मिलकर पढ़ें। स्थानीय/क्षेत्रीय त्योहारों से जुड़े चित्र, स्थानीय घटना आदि से जुड़े चित्र, चित्र-विवरण एवं लेखन के विषय हो सकते हैं।

तसवीरों पर चर्चा करना

सृजन और विश्लेषण को प्रोत्सहित करने वाली बातचीत, तसवीरों के ज़रिए अच्छी तरह की जा सकती है। तसवीरें फूल-पत्ती, पशु-पक्षी, स्कूल, बच्चे घटनाओं आदि पर आधारित हो सकती हैं। अखबारों और पत्रिकाओं के विज्ञापनों या खबरों के साथ छपे चित्र, कैलेंडरों, डाक टिकटों, लेबलों और पोस्टरों पर छपे चित्र – ये सभी काम में लाए जा सकते हैं। इस प्रकार तसवीरों के स्रोत बहुत व्यापक हैं और किसी छोटे गाँव में भी इन्हें ढूँढ़ा जा सकता है। अध्यापक साल-दर-साल इस्तेमाल के लिए तसवीरों का एक संग्रह बना सकते हैं।

बच्चों के बीच बैठकर बगैर किसी तैयारी के, बिलकुल अनौपचारिक ढंग से किसी तसवीर के बारे में बातचीत करना भी उपयोगी सिद्ध हो सकता है। यदि हम अवलोकन के विभिन्न पहलुओं के बारे में सचेत हो जाएँ तो बच्चों की भाषा के विकास की दृष्टि से हम ऐसी बातचीत को और भी अधिक उपयोगी बना सकते हैं। अध्यापक का हर प्रश्न बच्चों की प्रतिक्रिया को

एक निश्चित ढंग से प्रभावित करता है। सवालों के ज़रिए बच्चों की दृष्टि और प्रतिक्रिया को विस्तार देने की क्षमता विकसित की जा सकती है? प्रतिक्रिया के स्तर, जिनकी तरफ़ बच्चों का ध्यान हम प्रश्नों की मदद से मोड़ सकते है, वे ये हैं –

- **ढूँढ़ना** – *इस स्तर पर हम बच्चों से केवल इतना कहेंगे कि वे चित्र में दिखाई गई चीज़ों को ढूँढ़ें। हम इस तरह के प्रश्न पूछ सकते हैं – 'इस चित्र में क्या है?' 'क्या इस चित्र में एक चूहा है?' 'साइकिल पर कौन बैठा है?' 'लड़का कितना बड़ा है?' आदि।*
- **तर्क करना** – *प्रतिक्रिया के इस स्तर का संबंध कारण बताने की क्षमता से है। चित्र में दिखाई गई किसी बात का जो भी कारण बच्चा बताए, अध्यापक को उसे स्वीकार करना चाहिए। अध्यापक स्वयं भी कारण बता सकता है पर केवल एक संभव उत्तर के तौर पर, अंतिम उत्तर के तौर पर नहीं। प्रश्नों के उदाहरण – 'नन्हीं लड़की क्यों रो रही है?' 'मोटर साइकिल का पिछला हिस्सा हमें दिखाई क्यों नहीं दे रहा?' 'चूहा क्यों छिपा है?'*
- **आरोपण** – *इस स्तर पर हम बच्चे से खुद को चित्र में आरोपित करने को कहते हैं। अतः इस स्तर पर प्रश्न पूछने का उद्देश्य बच्चे को एक काल्पनिक स्थिति में स्वयं को रखने, कौन क्या कहेगा – यह कल्पना करने और उन्हें कैसा लगेगा-यह सोचने के लिए प्रोत्साहित करना है। प्रश्नों के उदाहरण – 'यदि तुम इस पेड़ पर बैठे होते तो तुम्हें कैसे/क्या दिखाई देता?' 'चूहा क्या सोच रहा होगा?'*
- **भविष्यवाणी** – *इस स्तर का संबंध चित्र में दिखाई गई स्थिति के बाद की घटनाओं का अनुमान करने से है। बच्चों को यह सोचने के लिए प्रेरित करना है कि अब आगे क्या होगा। प्रश्नों के उदाहरण – 'यह आदमी अब कहाँ जाएगा?' 'नन्हीं लड़की घर पर क्या करेगी?' 'वह घर कैसे पहुँचेगी?'*
- **संबंध बैठाना** – *अब हम ऐसे प्रश्न पूछेंगे जो बच्चों को चित्र में दिखाई गई स्थिति से मिलती-जुलती कोई चीज़ अपनी ज़िंदगी में ढूँढ़ने के लिए प्रेरित करे। प्रश्नों के उदाहरण – 'तुम कभी मोटर-साइकिल पर बैठे हो?' 'बैठकर कैसा लगता है?' 'क्या तुम कभी किसी अजनबी के साथ रहे हो?' 'उस दिन फिर क्या हुआ?'*

अब हम यदि प्रारंभिक साक्षरता कार्यक्रम की बात करें तो हमारा लक्ष्य है – लेखन के साथ-साथ बच्चों में पढ़ने की योग्यताएँ बढ़ाना, इसके लिए –

- सबसे पहले पाठ्यपुस्तक को पूरक सामग्री से जोड़ना होगा।
- पूरक सामग्री बाल साहित्य, बच्चों की पत्रिकाएँ, स्थानीय कथाएँ इत्यादि हो सकती हैं।
- पाठ को समझने के लिए कक्षा में उसे मात्र पढ़ लेना ही काफ़ी नहीं है।

- पाठ को विस्तार दें, जैसे कि पाठ के कथानक पर बच्चों को अपने अनुभव कहने के अवसर दें। अपने अनुभव बच्चों से बाँटें।
- पाठ से मिलती-जुलती पढ़ने की सामग्री बच्चों को सुनाएँ एवं पढ़ने को दें।
- कविताओं को ऐसे पढ़ें कि बच्चे उसकी लय को महसूस करें। याद करने और शिक्षक के पीछे दोहराने की क्रिया पर ज़ोर न हो।
- समझकर पढ़ने के लिए चित्रों का सहारा लेने की आदत बच्चों में डालें।
- जहाँ पाठ में चित्रों की कमी हो तो स्वयं बनाएँ।
- पाठों को क्रमवार भी पढ़ाना ज़रूरी समझें। जैसे 'बाग', 'सैर सपाटा' पाठों को एक साथ लिया जा सकता है। इन पाठों के साथ कहानियाँ, अनुभव इत्यादि जोड़ें।
- एक पाठ को पढ़ने में सात से दस दिन तक का समय लगाया जा सकता है।
- ब्लैकबोर्ड का इस्तेमाल ज़्यादा से ज़्यादा करें।
- बच्चों द्वारा कही गई बातों को ज़्यादा से ज़्यादा लिखें।

पूर्व तैयारी

- इस योजना के अनुसार अपनी तैयारी अवश्य करके आएँ, जैसे – जो पाठ या कहानी कक्षा में अगले दिन आपकी योजना का हिस्सा है उसे स्वयं पढ़ें। उसकी मुख्य विशेषताओं पर ग़ौर करें और पढ़ने-लिखने की गतिविधि तय करें।
- आप कक्षा में किन-किन उद्देश्यों के लिए किताब का इस्तेमाल कर सकते हैं, उस पर विचार करें, जैसे – अनुमान लगाने के लिए, लिखने की गतिविधि से जोड़ने के लिए, उस विषय से संबंधित कुछ और पढ़ने के लिए आदि।
- प्रतिदिन दो-तीन कहानियाँ/कविताएँ अवश्य पढ़ें ताकि आप स्वयं उनसे जुड़ सकें और उनके विभिन्न पहलुओं को समझ सकें।
- कविता/कहानी सुनाने से पहले उसे स्वयं कई बार पढ़ें ताकि आप उससे अच्छी तरह परिचित हो सकें। अन्यथा आपका ध्यान सुनाने में कम और खुद के लिए पढ़ने में ज़्यादा रहेगा।
- कहानी में ऐसे अंशों, वाक्यों को चुनिए जिनका इस्तेमाल आप बच्चों से अनुमान लगवाने के लिए, उनके अनुभव से जुड़ी बातें करने के लिए कर सकते हैं। ऐसे भी सवाल ज़रूर पूछें जिसका कोई निश्चित उत्तर न हो। बातचीत के लिए बिंदु या प्रश्न पहले से ही तैयार हों।
- किताब के चित्रों को गौर से देखिए ताकि कहानी सुनाते समय बच्चों का ध्यान उस ओर खींच सकें।
- यदि कार्य योजना में कोई खास गतिविधि, जैसे – स्थानीय भ्रमण, किसी संदर्भ व्यक्ति को कक्षा में आमंत्रित करना या चित्र-विवरण आदि शामिल किया गया है तो उसके लिए खास तैयारी कर लें। उदाहरण के लिए, चित्र पहले से ढूँढ़कर रखना और उस पर बातचीत के बिंदु तैयार करना, संदर्भ व्यक्ति

से मुलाकात के लिए पहले ही उनसे उद्देश्य के बारे में चर्चा करके समय और सामग्री को ध्यान में रखते हुए बातचीत का दायरा तय करना, स्थानीय भ्रमण के लिए जगह का पूर्व अवलोकन करना, प्रधानाध्यापक से अनुमति लेना और साथ ले जाने के लिए लिखने की सामग्री, पीने का पानी आदि सुनिश्चित करना।

टिप्पणी

- शिक्षक को धैर्य रखना होगा। प्रारंभ में बच्चों की प्रगति स्पष्ट रूप से भले ही दिखाई न पड़े लेकिन उसकी अनुगूँज कुछ समय के बाद अवश्य सुनाई देगी।
- कराई गई गतिविधि के अनुसार कक्षा में प्रिंट सामग्री का बदलाव ज़रूरी है।
- बदली गई सामग्री को सहेजकर रखने के लिए एक थैला बनाएँ या उसे व्यवस्थित रूप से रखने के लिए कोई प्रबंध अवश्य करें और भविष्य में उनका सही इस्तेमाल ज़रूर करें।
- यदि कक्षा में विशेष चुनौती वाले बच्चे भी हैं तो उसकी चर्चा उच्च अधिकारियों से अवश्य करें ताकि उन बच्चों के लिए आवश्यक सामग्री जुटाई जा सके और कक्षा-प्रक्रिया में उनके साथ पूर्ण न्याय किया जा सके।
- बच्चों की रुचि या परिस्थिति को देखते हुए कक्षा-योजना को लचीला बनाया जा सकता है।

इस संदर्शिका में शुरुआती लेखन से जुड़े बिंदुओं की सहज प्रस्तुति से आपको न केवल आनंद की प्राप्ति होगी बल्कि प्रांरभिक साक्षरता की समझ भी बनेगी।